RNI क्र. 50309/85 डाक पंजीयन क्र. म. प्र./भोपाल/261/2021-23/पृष्ठ संख्या 88/प्रकाशन तिथि 1 नवम्बर 2022

बाल विज्ञान पत्रिका, नवम्बर-दिसम्बर 2022

चकमक

मूल्य ₹100

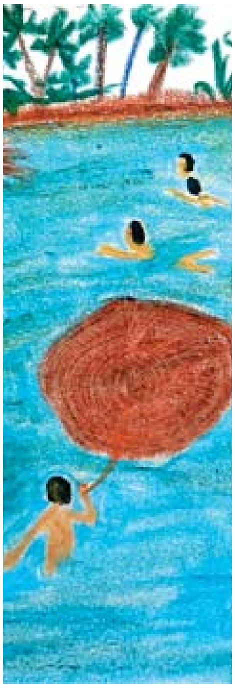

इस बार

मेरा पन्ना विशेषांक

अन्तर ढूँढो	4
मैं बहुत डर गई थी - सिमरन बारसे	5
मेरी बिल्ली और मैं - आदिबा ताम्बोली	8
डॉक्टर-डॉक्टर - श्रेया देवकर	9
खज़ाने की खोज - मिती जोशी	12
घर में भूकम्प - राधिका	14
भारत-नेपाल बॉर्डर पर - द्युति	15
माथापच्ची	18
मलगेर - अर्चना मड़कामी	20
क्यों-क्यों	22
गाँव में शेर - अक्षरा कालिदास खोब्रागडे	24
भूलभुलैया	27
मज़ेदार शुरुआत - आशु खाम्ब्लाई	28
चित्रपहेली	30
मेरे गाँव के खेल - वेट्टी हिड़मा	32
कबड्डी - सादिका	34
बेर और भालू - समीक्षा किशोर मंडलवार	35
लॉकडाउन में यात्रा - दीपिका पवार	38
बिना बताए घूमना - शारदा उइके	39
जाति - श्लोक सरोज	40
मेरा पसन्दीदा खेल - फिज़ा	42
मेरे सपनों का घर	44
जंगल में शिकार घूमना - रमेश नाग	48
बिस्तर में पेशाब - सूफियान	50
इतनी बड़ी लक्ष्मी - जोया खान	52
चिड़ियाघर की सैर - आस्था द्विवेदी	53

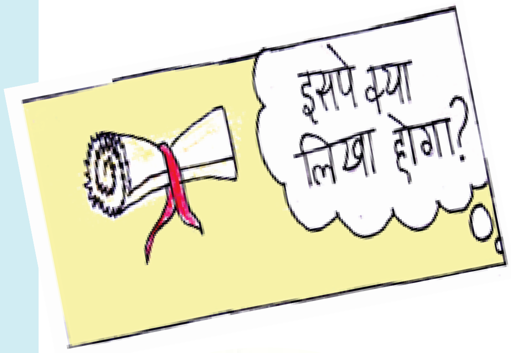

जंगली सूअर की दावत - कमलेश कुमार पोड़ियामी	56
कुछ बुंदेलखण्डी खेल - निशा पाल, वर्षा अहिरवार, गंगा अहिरवार, हरिओम चढ़ार	58
डायन - अनामिका राय	60
इमारतों का जंगल - ऋषभ	64
तेन्दुए से मुलाकात - अंकित जलाल	66
माथापच्ची	68
चीटियाँ और शरबत - अनम	71
लॉकडाउन के समय - शनि पाल	71
सोच में अन्तर - शहनाज़	73
भूलभुलैया	74
हमारे गाँव के आकाश में - पारस पवांर	75
वी आर टू गो टू	76
चित्रपहेली	78
मैं डाँसर हूँ! - बबीता मरकाम	81
दुर्घटना - बिलाल अहमद	83
घड़ी की दुकान - दिलीप साहू	84
हाथी - सरस	88

अंक 434-435 ● नवम्बर-दिसम्बर 2022

चकमक

बाल दिवस की तुम सबको ढेर सारी शुभकामनाएँ!

हर साल की तरह नवम्बर का यह अंक मेरा पन्ना विशेषांक है। लेकिन हर साल से जुदा बात ये है कि यह नवम्बर-दिसम्बर का संयुक्त अंक भी है। यानी इसमें तुम्हारी रचनाओं के लिए दुगनी जगह है। हमने तुम सबसे रचनाएँ माँगी थीं और तुमने हमें निराश नहीं किया।

इस अंक के अन्तिम स्वरूप लेने तक भी हमें तुम्हारी रचनाएँ मिल ही रही हैं। इन्हें हम आगामी अंकों में इस्तेमाल करेंगे। यह अंक कुछ अन्य कारणों से भी खास है इसमें हमने तुम्हारी काफी सारी रचनाओं और किस्सों को कॉमिक का रूप दिया है।

हर साल चकमक टीम को इस अंक का इन्तज़ार रहता है। इसे बनाने में हमें सबसे ज़्यादा मज़ा आता है। उम्मीद है कि इसे पढ़कर तुम्हें भी उतना ही मज़ा आएगा।

चकमक टीम

सम्पादक
विनता विश्वनाथन

सह सम्पादक
कविता तिवारी

विज्ञान सलाहकार
सुशील जोशी
उमा सुधीर

वितरण
झनक राम साहू

डिज़ाइन
कनक शशि

डिज़ाइन सहयोग
इशिता देबनाथ बिस्वास

सलाहकार
सी एन सुब्रह्मण्यम्
शशि सबलोक

आवरण: भरत शर्मा, आठवीं, हेमन्त मालवीय, चौथी, गौरव पांचाल, छठवीं, अर्पित सिंह राजपूत, छठवीं, पीयूष प्रजापत, आठवीं, होली एंजेल्स स्कूल और लंकेश विश्वकर्मा, सातवीं, कैम्ब्रिज हायर सैकेंडरी स्कूल, देवास, मध्य प्रदेश

एक प्रति : ₹ 100

सदस्यता शुल्क
(रजिस्टर्ड डाक सहित)
वार्षिक : ₹ 800
दो साल : ₹ 1450
तीन साल : ₹ 2250

चन्दा (एकलव्य के नाम से बने) मनीऑर्डर/चेक से भेज सकते हैं।
एकलव्य भोपाल के खाते में ऑनलाइन जमा करने के लिए विवरण:
बैंक का नाम व पता - स्टेट बैंक ऑफ इंडिया, महावीर नगर, भोपाल
खाता नम्बर - 10107770248
IFSC कोड - SBIN0003867
कृपया खाते में राशि डालने के बाद इसकी पूरी जानकारी accounts.pitara@eklavya.in पर ज़रूर दें।

एकलव्य
फोन: +91 755 2977770 से 2 तक; ईमेल: chakmak@eklavya.in, circulation@eklavya.in
वेबसाइट: https://www.eklavya.in/magazine-activity/chakmak-magazine

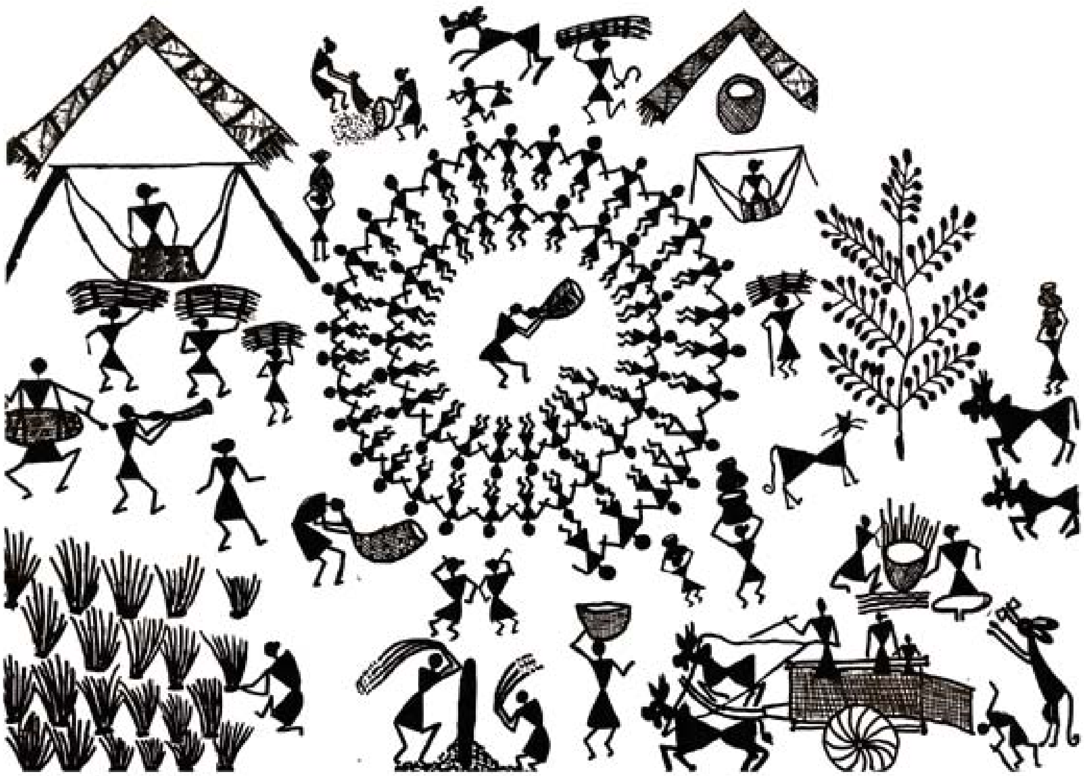

इन दोनों चित्रों में कुछ अन्तर हैं। तुम कितने ढूँढे?

अन्तर ढूँढो

चित्र: आदित्य नागर, सातवीं 'स', सरदार पटेल विद्यालय, दिल्ली

मेरा पन्ना

मैं बहुत डर गई थी

सिमरन बारसे
दसवीं, शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय झापरा, सुकमा, छत्तीसगढ़
चित्र: प्रोइति रॉय

एक दिन की बात है। मैं और मेरी बहन खेत घूमने गए। खेत में हमारी माँ और बड़ी माँ काम कर रहे थे।

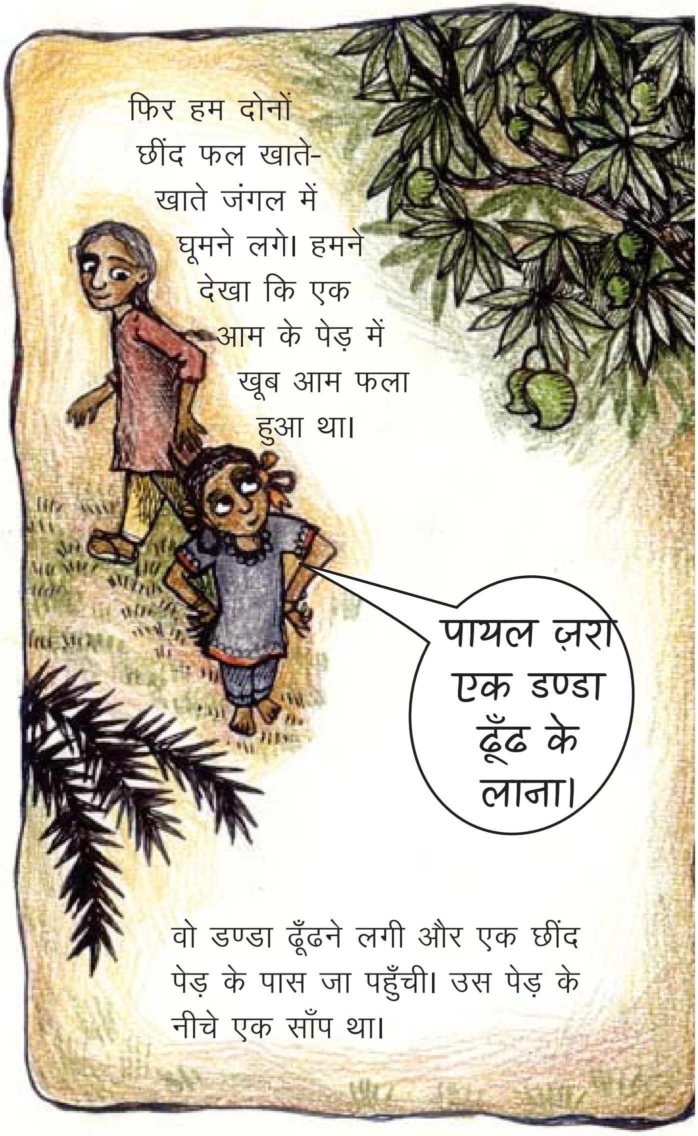
फिर हम दोनों छींद फल खाते-खाते जंगल में घूमने लगे। हमने देखा कि एक आम के पेड़ में खूब आम फला हुआ था।
पायल ज़रा एक डण्डा ढूँढ के लाना।
वो डण्डा ढूँढने लगी और एक छींद पेड़ के पास जा पहुँची। उस पेड़ के नीचे एक साँप था।

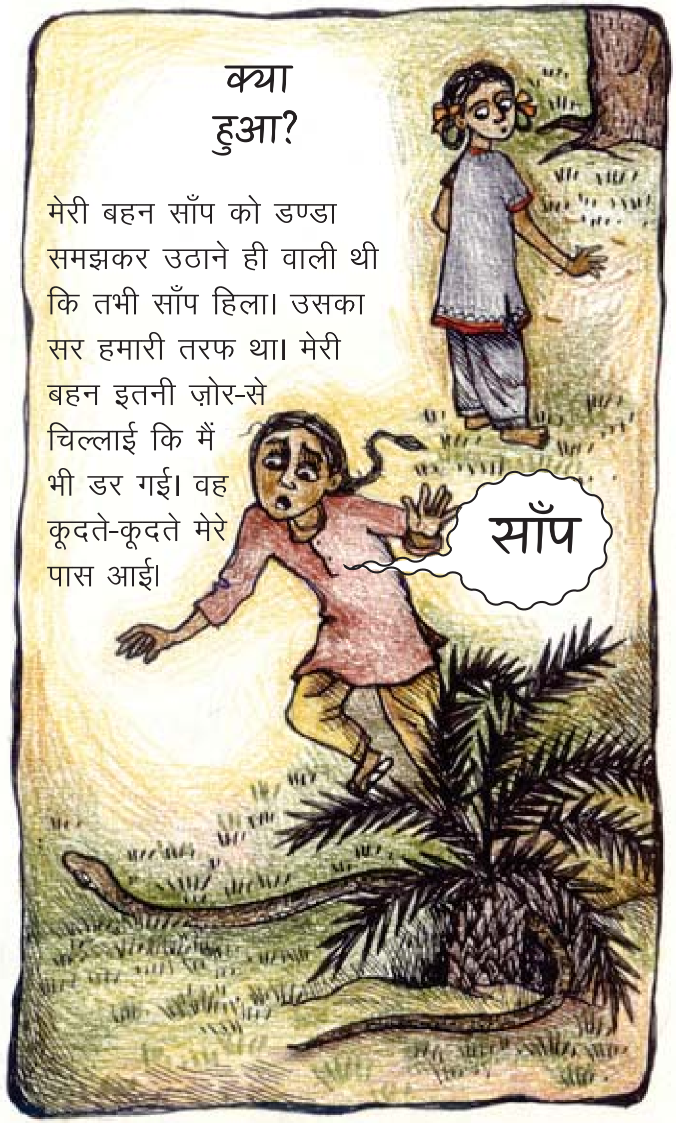
क्या हुआ?
मेरी बहन साँप को डण्डा समझकर उठाने ही वाली थी कि तभी साँप हिला। उसका सर हमारी तरफ था। मेरी बहन इतनी ज़ोर-से चिल्लाई कि मैं भी डर गई। वह कूदते-कूदते मेरे पास आई।
साँप

साँप, साँप, साँप
मैं भी डर गई और चिल्लाने लगी। फिर हमने देखा कि साँप का बिल उस छींद झाड़ में था। हम देखने गए कि साँप वहाँ है या नहीं। पर साँप वहाँ नहीं था।

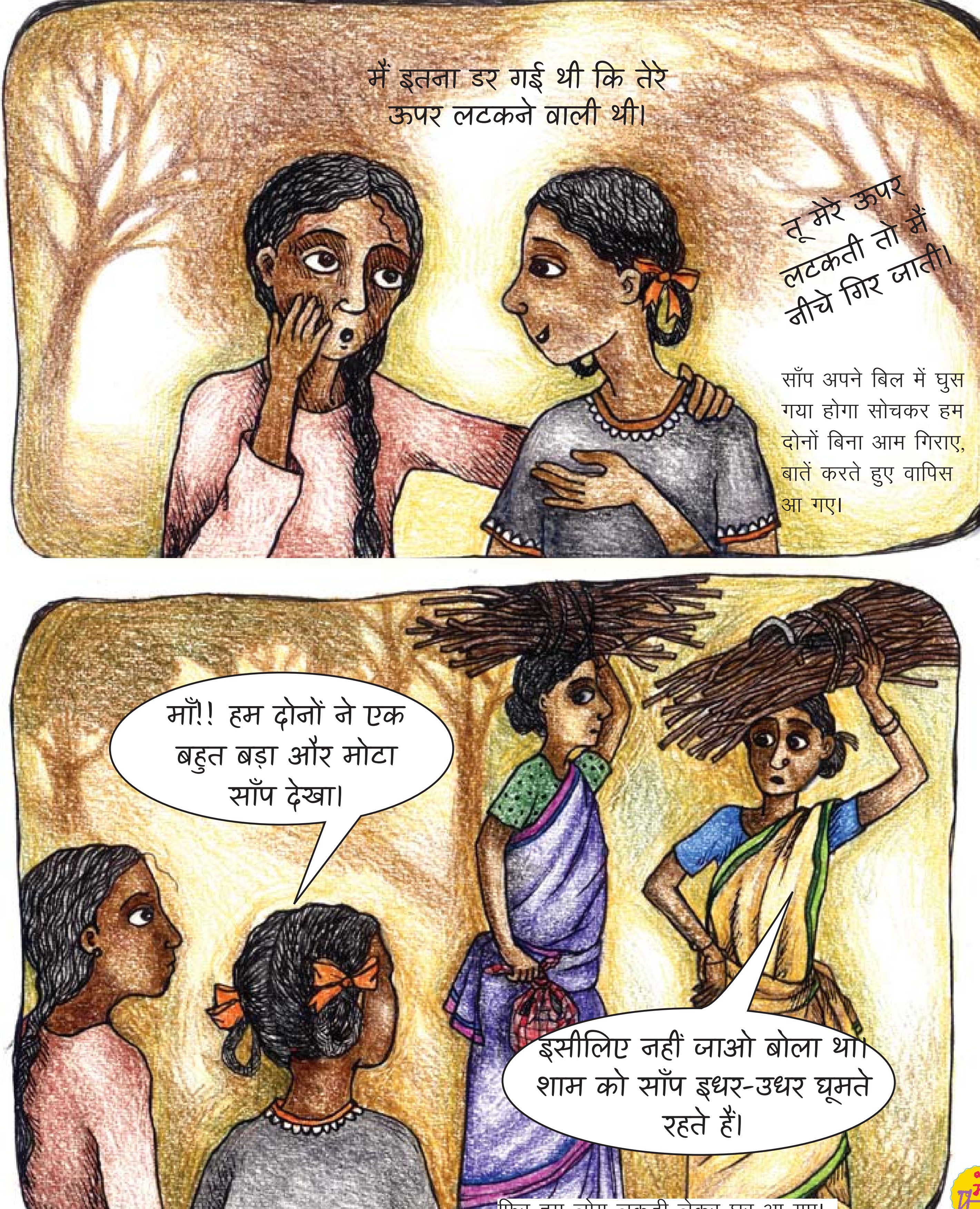
मैं इतना डर गई थी कि तेरे ऊपर लटकने वाली थी।
तू मेरे ऊपर लटकती तो मैं नीचे गिर जाती।
साँप अपने बिल में घुस गया होगा सोचकर हम दोनों बिना आम गिराए, बातें करते हुए वापिस आ गए।
माँ!! हम दोनों ने एक बहुत बड़ा और मोटा साँप देखा।
इसीलिए नहीं जाओ बोला था। शाम को साँप इधर-उधर घूमते रहते हैं।
फिर हम लोग लकड़ी लेकर घर आ गए।

मेरी बिल्ली और मैं

आदिबा ताम्बोली
पाँचवीं, प्रगत शिक्षण संस्थान, फलटण, सतारा, महाराष्ट्र

चित्र: महेश, दसवीं, माता भगवती चड्ढा निकेतन, नोएडा, उत्तर प्रदेश

गर्मी की छुट्टी लग चुकी थी और छुट्टियाँ लगे काफी दिन भी हो चुके थे। फिर मेरे भाई ने कहा, "कुछ अच्छा हो जाए।" हमने कहा, "ठीक है।" फिर मैंने कहा, "हम बिल्ली लाएँ क्या?" फिर ऐमन बोली, "अरे! अभी सबकी इजाज़त लेनी पड़ेगी।" "ठीक है, ले लेंगे।" ऐसा कहकर मेरा भाई चला गया। अली बोला, "कहा तो सही पर सामने जाकर बोलेगा कौन?" भाई बोला, "मैं बोलूँगा।" हमने कहा, "ठीक है।" भाई ने सबकी इजाज़त ले ली। और साथ में ये भी कहा कि उस बिल्ली को मैं सँभालूँगा।

फिर हमने बिल्ली को लाया। उसे पाल-पोसकर बढ़ा किया। कुछ दिनों में बारिश का मौसम शुरू हो गया। और एक दिन इतनी ज़ोर-से बारिश होना शुरू हो गई कि हम बिल्ली को अन्दर लेना भूल गए। फिर उस बिल्ली को कुत्तों ने पकड़ लिया और मार डाला। और ये बात हमें सुबह पता चली। बिल्ली मर चुकी थी ये बात पता चलने के बाद मुझे बहुत दुख हुआ। बेचारी बिल्ली।

डॉक्टर-डॉक्टर

श्रेया देवकर
नौवीं, प्रगत शिक्षण संस्थान
फलटण, सतारा, महाराष्ट्र

चित्र: हीरा धूर्वे

जब मैं बालवाड़ी में थी तो स्कूल के बाद उस हॉस्पिटल में रहती थी जिसमें मेरी मम्मी काम करती थीं। मेरी मम्मी नर्स थीं।

उस समय मेरा बड़ा भाई स्कूल जाता था और मेरे पापा काम पर। इसलिए मुझे अपनी मम्मी के साथ रहना पड़ता था। मैं उन्हें सारे काम करते देखती — कैसे वो मरीज़ों को इंजेक्शन लगातीं, कैसे सलाइन चढ़ातीं।

कार्तिक मरीज़

तन्वी नर्स

मैं डॉक्टर

मैंने बिसलेरी की खाली बोतल ली और उसके ढक्कन में छेद कर दिया। उस छेद से मैंने एक धागा डाला और उसके आखिरी सिरे पर एक सूई बाँध दी।

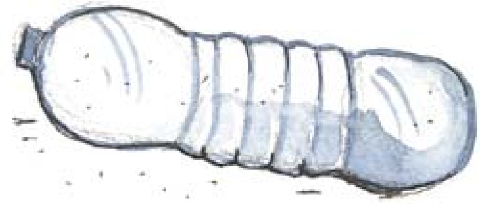

मैंने सलाइन की बोतल को एक पेड़ पर टाँग दिया।

मैं कार्तिक के हाथ में सूई चुभाने ही वाली थी कि मम्मी दौड़ती हुई वहाँ आईं।

उसके बाद बहुत डाँट पड़ी और रोना-धोना भी हुआ। अगले दिन से मम्मी ने मुझे डे-केयर सेंटर में डाल दिया और मेरे समझदार होने तक कभी मुझे अपने साथ हॉस्पिटल नहीं ले गईं।

मुझे वह कागज़ नहीं मिल रहा!
क्लिक
अरे! ये तो कागज़ नहीं है! यहा पे कागज़ के अलावा कुछ नहीं था!
क्लिक
गुप्त दराज़!
ये तो नक्शा लगता है!
इसपे क्या लिखा होगा?
खज़ाने का नक्शा!

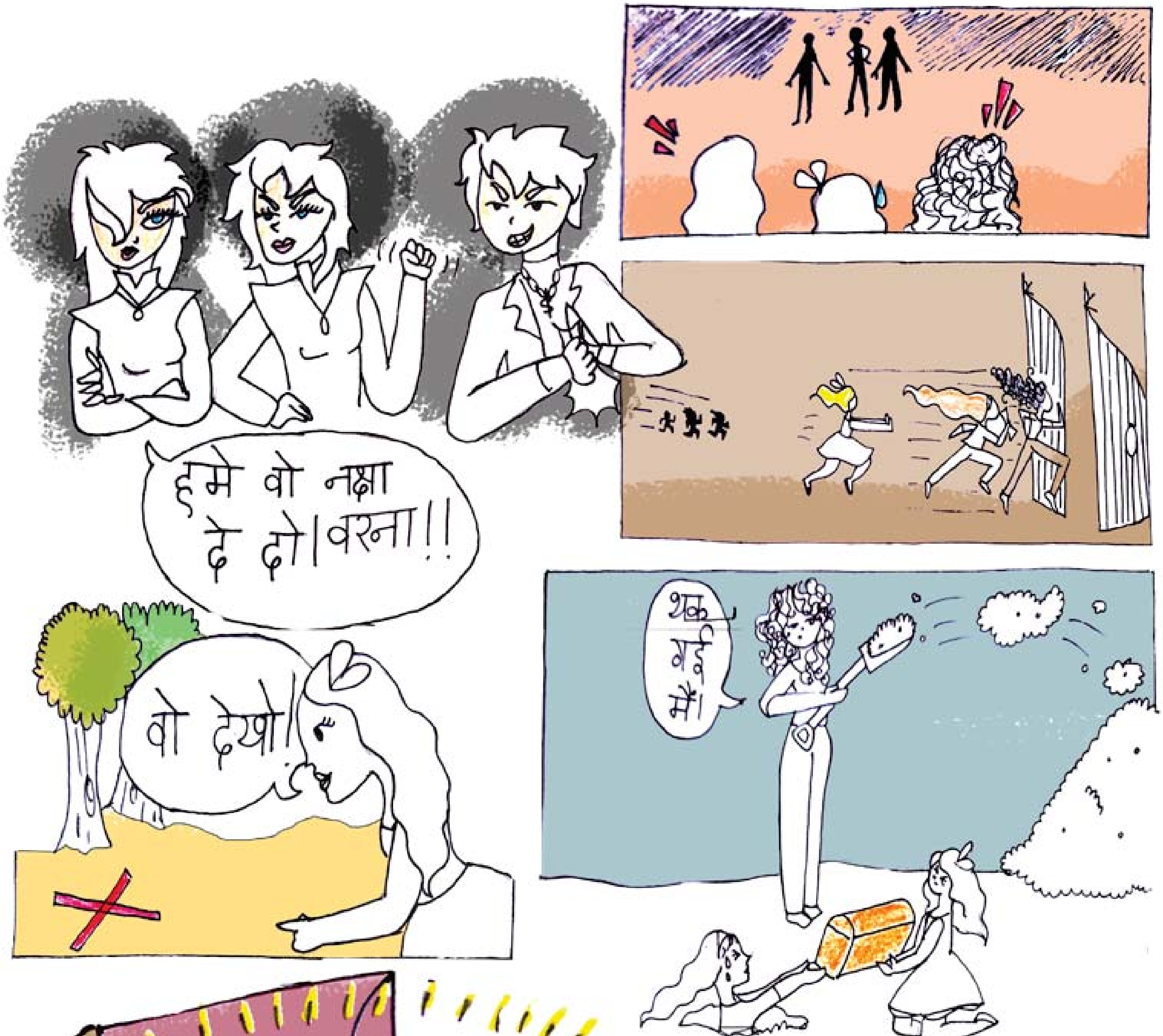

खज़ाने की खोज

मिती जोशी
डी.एल.आर.सी, पुणे
कक्षा : पाँचवी

घर में भूकम्प

राधिका
पाँचवीं, कम्पोज़िट स्कूल
धुसाह, बलरामपुर, उत्तर प्रदेश

एक दिन की बात है जब मैं स्कूल से लौटी तो मैं खाना खाने लगी। तभी अचानक भूकम्प आ गया। हम लोग बाहर निकल भागे। पूरा घर हिल रहा था। हमें बहुत डर लगा। यह सब सिर्फ दो-तीन मिनट ही हुआ।

थोड़ी देर बाद जब हम घर में आए तो देखा कि बगल की दीवार फूट गई थी। पंखा भी गिर गया था। मेज़ पर से काफी सामान इधर-उधर बिखर गया था। दीवार पर टँगी घड़ी गिरकर फूट गई थी। हम लोग बहुत डर गए थे।

धीरे-धीरे हमने सभी चीज़ें वापस अपने स्थान पर रखीं। उस रात हम लोग सोए नहीं क्योंकि हमें डर था कि कहीं रात को फिर से भूकम्प न आ जाए।

चित्र: रूही, तीसरी, सावित्रीबाई फुले फातिमा शेख पुस्तकालय, भोपाल, मध्य प्रदेश

भारत-नेपाल बॉर्डर पर

द्युति
तीसरी, फातिमा सीनियर सैकेंडरी स्कूल
बलरामपुर, उत्तर प्रदेश
चित्र: अक्षय सेठी

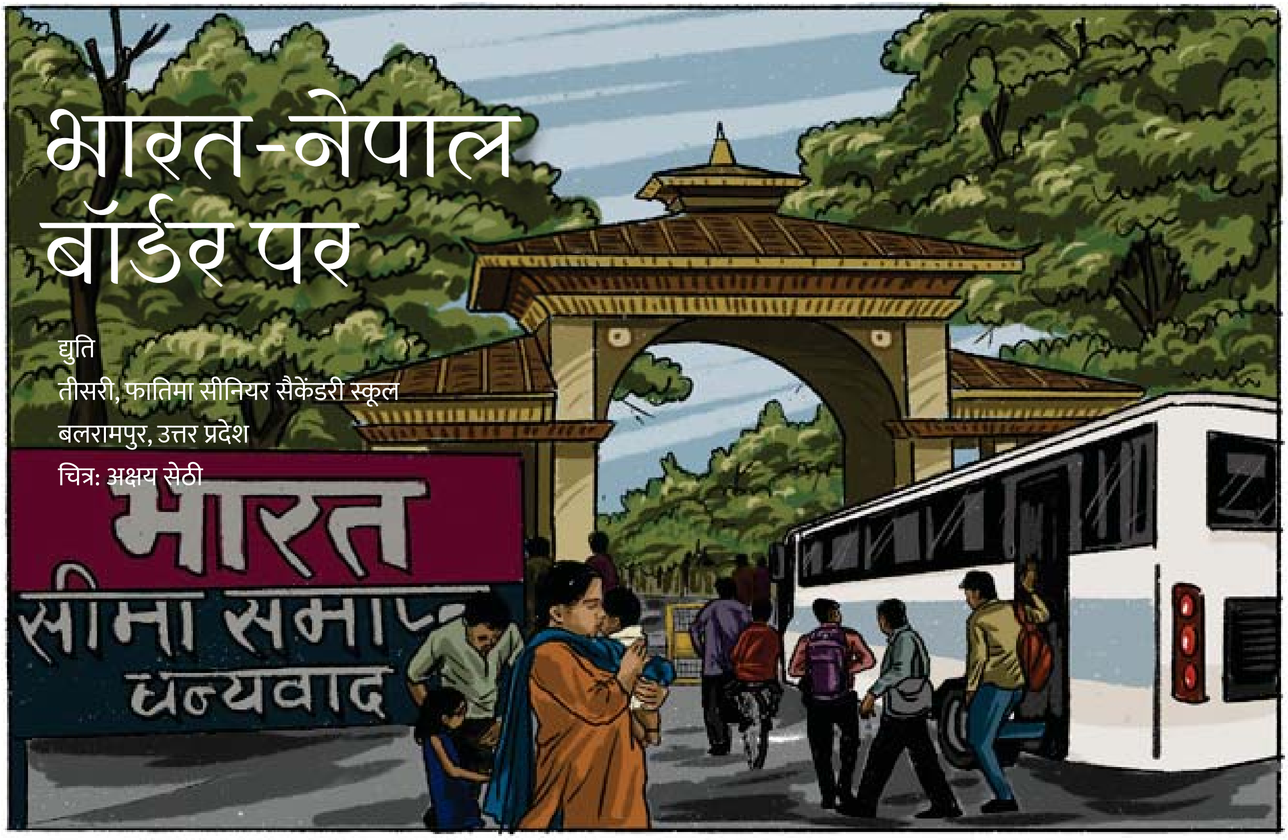

गर्मी की छुट्टियों में मैं अपने नाना के घर जा रही थी। मेरे नाना का घर भारत-नेपाल बॉर्डर पर है। हमें नेपाल बॉर्डर पार करके जाना पड़ता है। भारत और नेपाल देश की सीमा पर पुलिस का सख्त पहरा होता है, जिसे भंसार चेकपोस्ट कहते हैं।

हम कोई भी सामान भारत से नेपाल लेकर जाते हैं तो वहाँ की पुलिस हमारे सामानों की जाँच करती है। मामा हमेशा हमें लेने आते हैं और नेपाली में पुलिस से बात कर लेते हैं तो हमारी अटैची व बैग की तलाशी नहीं होती।

हालाँकि हमारे बैग में कपड़े ही होते हैं, फिर भी भंसार चेक पोस्ट को पार करना थोड़ा मुश्किल लगता है। मामा ने बताया था कि यह जाँच स्मगलिंग रोकने के लिए बहुत ज़रूरी है, क्योंकि बहुत-से लोग नेपाल से सुपारी, इलायची, लॉन्ग, चाइना का खासा कपड़ा, सोने के सामान व अन्य सामान चोरी-छिपे भारत में लाते और बेचते हैं। इसी प्रकार भारत के कपड़े आदि से सम्बन्धित सामान उस पार स्मगल होता है। इसमें काफी टैक्स चोरी होती है, इसीलिए पुलिस हर आते-जाते सामान को चेक करती है।

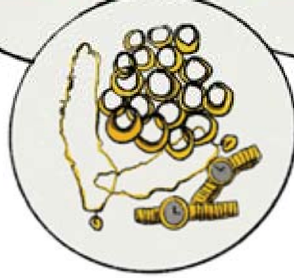

इस बार जब मैं नाना के घर पर थी, तभी मेरे भाई का जन्मदिन पड़ा। तो हम लोगों को गुब्बारे, खिलौने और केक खरीदने के लिए भंसार बॉर्डर से उस पार भारत में जाना पड़ा। मैं अपनी एक दीदी के साथ बाज़ार गई और हम लोगों ने पार्टी के लिए काफी सामान खरीदा।

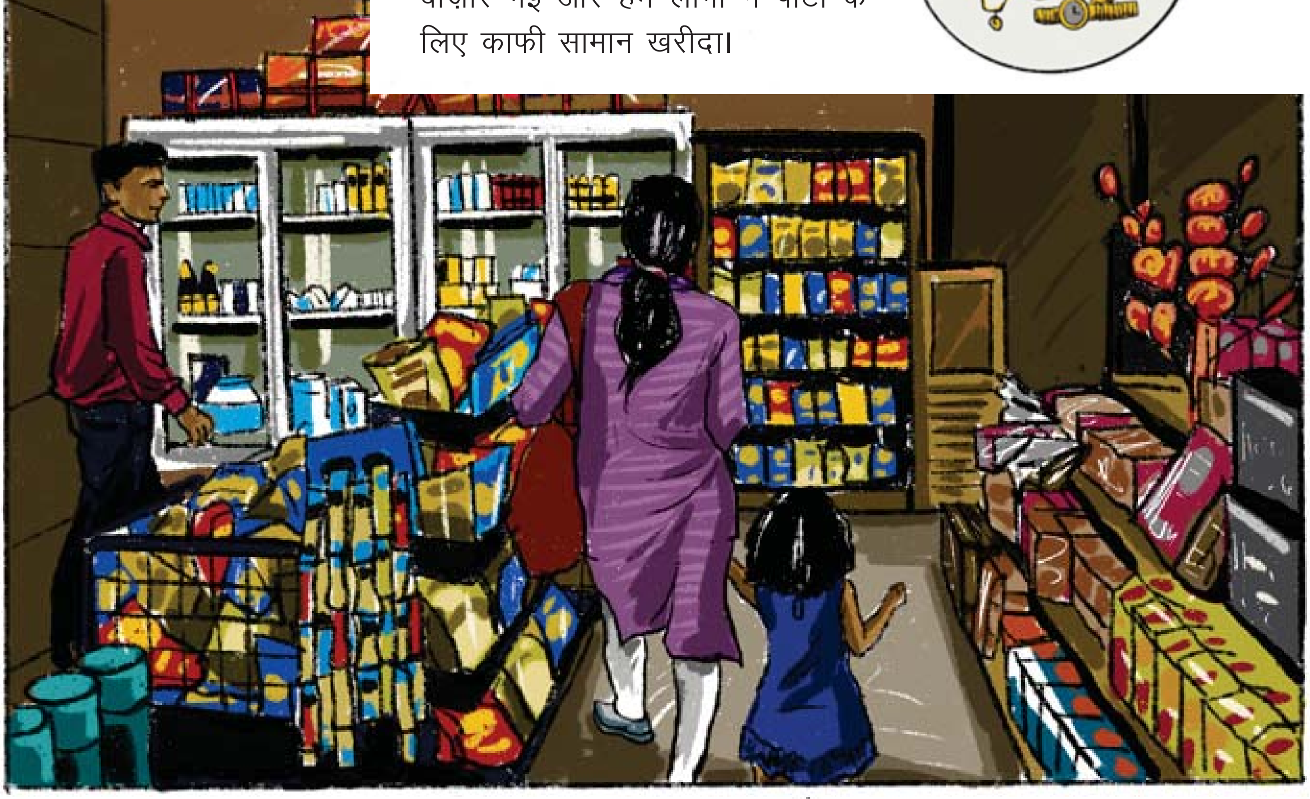

पुलिस ने हमारे थैलों में सारा सामान चेक किया। दीदी को भी नेपाली नहीं आती थी परन्तु उन्होंने नाना जी का पता बताया, तो पुलिस ने हमें जाने दिया। ऐसा लगा जैसे कि जान बच गई हो।

हम लोग जल्दी-जल्दी कदम बढ़ाकर सीधा घर आ गए और सारी बात मामा को बताई।

1. अहाना के पास जोड़ की आकृति का लकड़ी का एक टुकड़ा है। वह केवल दो सीधे कट लगाकर उसे 4 बराबर भागों में इस तरह बाँटना चाहती है कि उन भागों को जोड़कर वह एक चौकोर बना सके। क्या तुम उसकी कुछ मदद कर सकते हो?

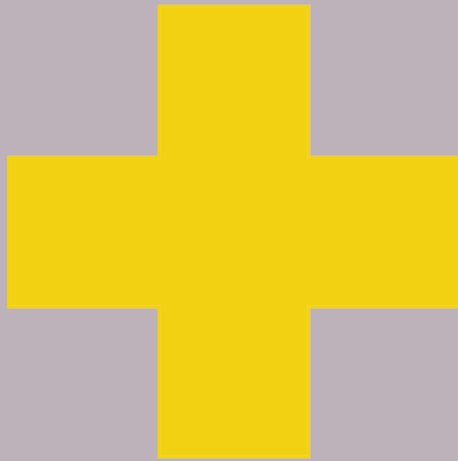

2. सभी खाली जगहों में एक ही शब्द आएगा। कौन-सा?

एक व्यक्ति..........खरीदने के लिए..........घर गया। जब वो वहाँ पहुँचा तो अचानक उसे ....बजने की आवाज़ सुनाई दी। उसने एक..........लगा कर वहाँ से एक.......... खरीदा और घर लौट आया।

3. एक जलते हुए घर के सामने तीन लोग खड़े थे। एक आदमी ज़बरदस्ती उन तीनों को उस जलते हुए घर से दूर कर देता है। इसके लिए उस आदमी को जेल हो जाती है। भला क्यों?

4. ज़ेनी और अयान में से एक हमेशा सोमवार, बुधवार और शुक्रवार को झूठ बोलता है और दूसरा मंगलवार, गुरुवार और शनिवार को। बाकी के दिन वो सच बोलते हैं। नीचे दी गई बातचीत के आधार पर बता सकते हो कि उस दिन कौन-सा वार था?

5. दी गई ग्रिड में कई सारे कपड़ों के नाम छिपे हुए हैं। तुमने कितने ढूँढ़े?

दु	स	द	स्ता	ने	चो	जैं	नी	म
प	फ्रॉ	फ	ल	हँ	गा	ल	के	स्वे
ट्टा	टो	क	लं	जीं	पे	टी	को	ट
ओ	पी	मी	नी	गो	स	ल	वा	र
ब्ला	उ	ज़	क	मी	ट	म	लुं	क
प	तौ	झ	ब	ला	स्वे	फ	प	गी
ग	त	लि	नि	क्क	र	ल	त	ग
नी	ढ़	लू	या	स्क	ब	र	सा	ती
अ	च	क	न	र्ट	क	जी	फा	ड़ी

माथापच्ची

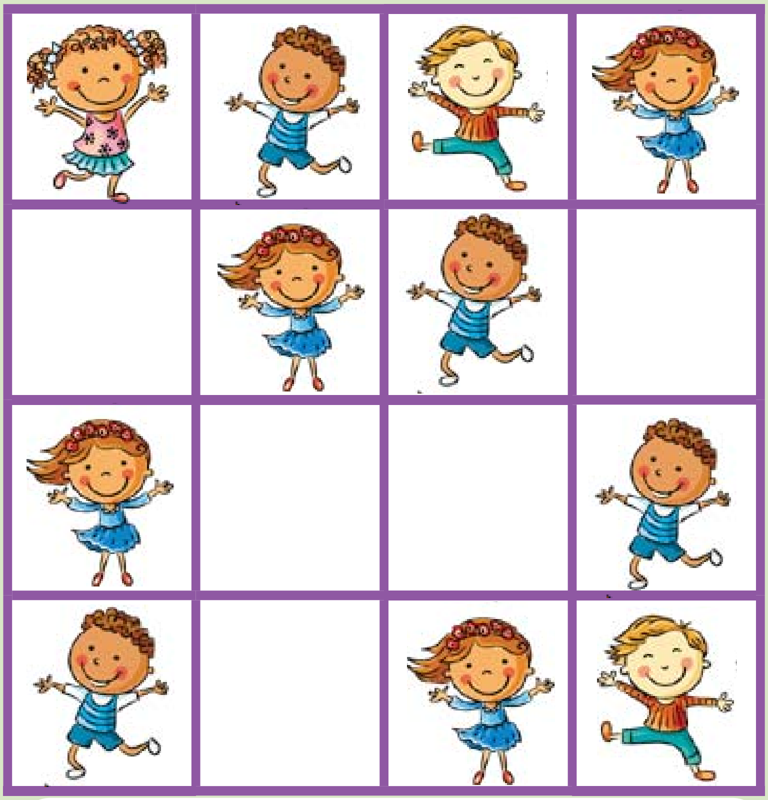

6. दी गई ग्रिड की हर पंक्ति व हर कॉलम में अलग-अलग बच्चा आना चाहिए। इस शर्त के आधार पर खाली जगहों में कौन-से बच्चे आएँगे?

7.

___ x ___ = 2

___ ÷ ___ = 2

___ - ___ = ?

8.

नीचे कुछ हिंट दिए गए है। इनके आधार पर क्या तुम बता सकते हो कि तिजोरी को खोलने का सही कोड क्या है?

368 - एक नम्बर सही है और सही जगह पर है।

387 - कोई भी नम्बर सही नहीं है।

276 - एक नम्बर सही है, पर गलत जगह पर है।

471 - दो नम्बर सही हैं, मगर गलत जगह पर हैं।

जवाब पेज 86-87 पर

फटाफट बताओ

क्या है जो स्कूटर में है पर साइकिल में नहीं, मोटर गाड़ी में है पर हवाई जहाज़ में नहीं?

('ट' अक्षर)

अगर तुम्हारे पास दो बिल्ली और दो गाय हैं तो तुम्हारे पास कुल कितने पैर हुए?

([illegible])

लोग हमेशा अपनी जीत माँगते हैं, पर ऐसी कौन-सी जगह है जहाँ लोग हार माँगते हैं?

(फूल की दुकान)

क्या है जो पानी पीते ही मर जाती है?

(प्यास\आग)

वह क्या है जो अपनी जगह से हिले बिना ही हमें ऊँचाई पर ले जाती है?

(सीढ़ी)

क्या है जो ज़मीन पर होने के बाद भी गन्दी नहीं होती?

(परछाई)

अगर तुम लाल पत्थर को पानी में फेंको तो क्या होगा?

(पत्थर गीला हो जाएगा)

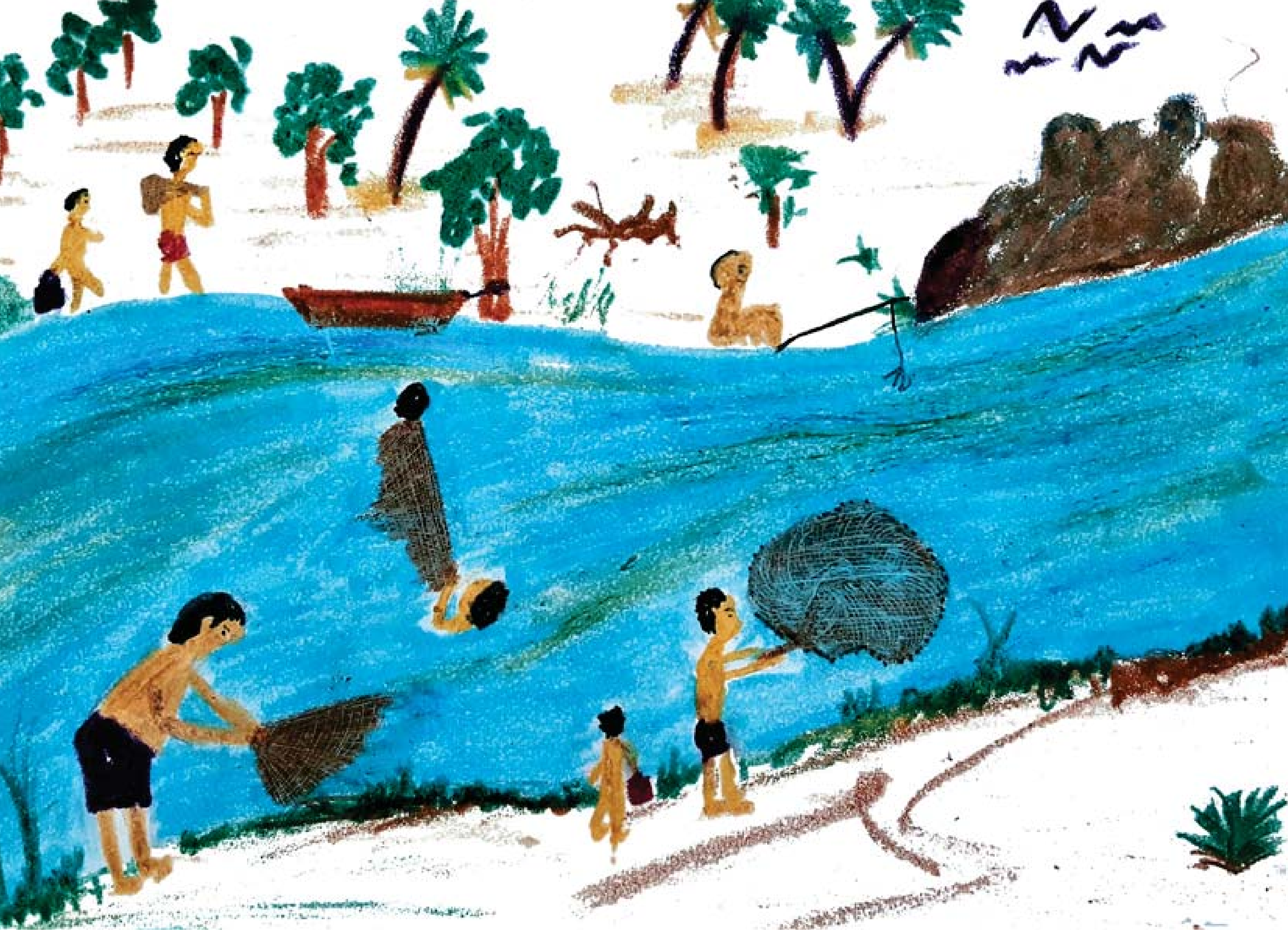

मलगेर

अर्चना मड़कामी
दसवीं, शासकीय उच्चतर
माध्यमिक विद्यालय, झापरा
सुकमा, छत्तीसगढ़

चित्र: विष्णु करटामी
सत्रह वर्ष
कोडरीकोसुम, सुकमा, छत्तीसगढ़

मेरे गाँव में एक नदी बहती है। नदी का नाम 'मलगेर' है। गर्मियों के दिनों में नदी में पानी कम बहता है। इन दिनों गाँववाले मछलियों को मारनेवाला फल लेने पहाड़ी जाते हैं। इस फल को गोंडी में वस्सा-काया कहते हैं। यह काया नदी में फेंकने से मछलियाँ इसे खाकर मर जाती हैं। नदी का पानी गरम होने के कारण भी मछलियाँ मर जाती हैं। गर्मी के समय गाँववाले बहुत मछलियाँ पकड़ते हैं। मछली पकड़ने में हमें बहुत मज़ा आता है।

बरसात के समय बाढ़ आती है तो लोग बहुत मछलियाँ पकड़ते हैं। मेरे पापा मछली पकड़ने के लिए रात को जाते हैं और सुबह वापिस आते हैं। मछली पकड़ने के लिए वले-डण्डे ले जाते हैं और किनारे रहकर वले-डण्डे को पानी में

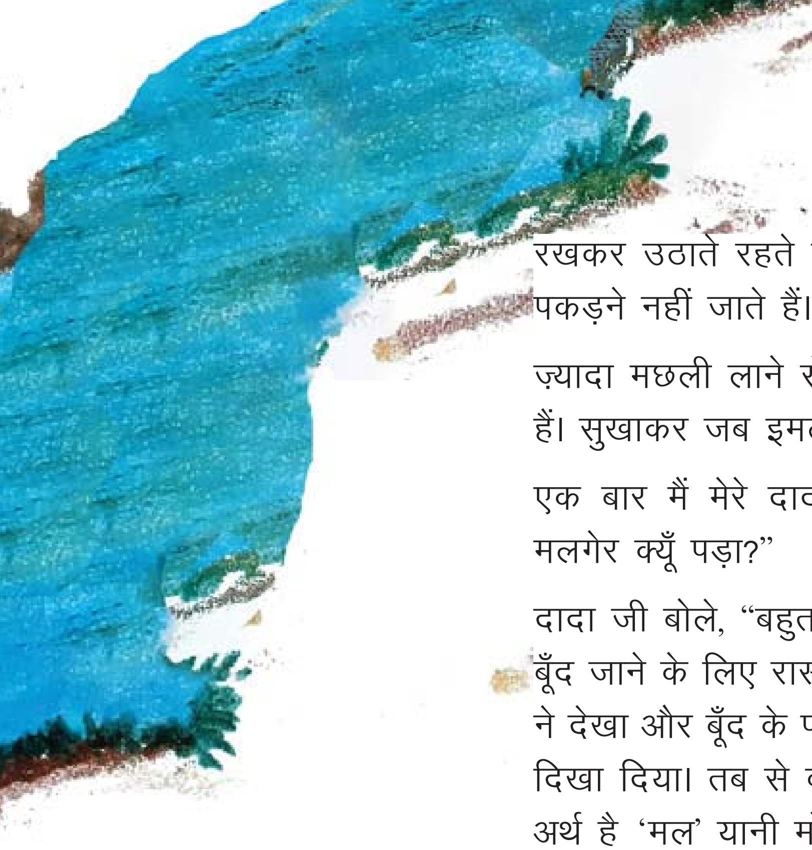

रखकर उठाते रहते हैं। बहुत ज़्यादा बाढ़ आने पर लोग मछली पकड़ने नहीं जाते हैं।

ज़्यादा मछली लाने से आधा मछली बनाते हैं और आधा सुखाते हैं। सुखाकर जब इमली सब्ज़ी बनाते हैं तो उसमें डालते हैं।

एक बार मैं मेरे दादा जी से पूछी, "दादा जी, नदी का नाम मलगेर क्यूँ पड़ा?"

दादा जी बोले, "बहुत पहले की बात है। एक छोटी-सी पानी की बूँद जाने के लिए रास्ता ढूँढ रही थी। तभी उस बूँद को एक मोर ने देखा और बूँद के पास गया। उसने बूँद को अपने पैरों से रास्ता दिखा दिया। तब से वहाँ बहने लगी – मलगेर। हिन्दी में इसका अर्थ है 'मल' यानी मोर और 'गेर' यानी 'पैरों के निशान'।"

सबसे प्यारी नदी मलगेर है।

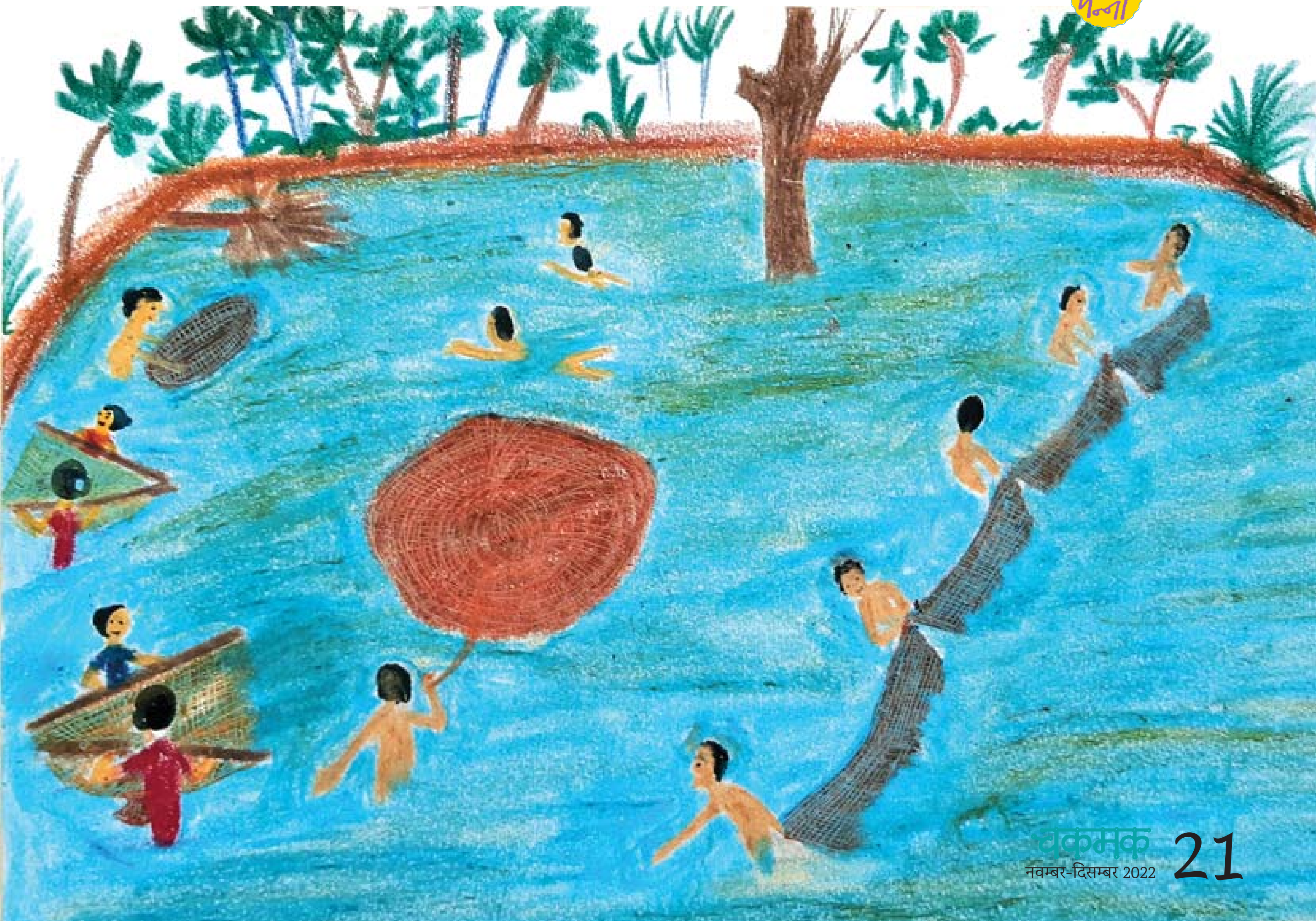

क्यों क्यों

नवम्बर-दिसम्बर अंक के क्यों-क्यों के लिए पूछे गए सवाल के तुमसे बहुत कम जवाब मिले। इसलिए हम जनवरी अंक के लिए इस सवाल को फिर से दे रहे हैं।

गरीबी/रईसी के चलते लोग हमारे साथ अलग-अलग तरह से बर्ताव करते हैं। ऐसे अनुभव कभी अच्छे होते हैं, तो कभी बुरे। ऐसे बर्ताव का यदि तुम्हारा कोई अनुभव है तो वह क्या है और तुम्हें क्या लगता है कि ऐसा बर्ताव तुम्हारे साथ क्यों किया गया होगा?

अपने जवाब तुम हमें लिखकर या चित्र/कॉमिक बनाकर भेज सकते हो।

जवाब तुम हमें chakmak@eklavya.in पर ईमेल कर सकते हो या फिर 9753011077 पर व्हॉट्सऐप भी कर सकते हो। चाहो तो डाक से भी भेज सकते हो। हमारा पता है:

चकमक

एकलव्य फाउंडेशन, जमनालाल बजाज परिसर, जाटखेड़ी, फॉर्चून कस्तूरी के पास, भोपाल - 462026 मध्य प्रदेश

मुझे एक बात समझ में नहीं आती कि हमेशा अमीर और गरीब में फर्क क्यों करते हैं। आखिर अमीर भी इन्सान होते हैं और गरीब भी इन्सान ही होते हैं। मैंने एक बार देखा था। एक गरीब लड़का था। उसने अपने जीवन में कभी मेला नहीं देखा था। एक दिन उस गाँव में मेला लगा। वो लड़का उस मेले में गया। वहाँ पर उसने एक मिठाई की दुकान देखी। वो वहाँ पर गया और उसने एक मिठाई उठा ली। तो उस दुकानवाले ने उसे वहाँ से धक्का देकर भगा दिया। मुझे समझ नहीं आया कि दुकानवाले ने उसे क्यों भगा दिया। आखिर उसकी गलती क्या थी।

उत्कर्षिता तिवारी, सातवीं, देवास, मध्य प्रदेश

हाँ, मेरे साथ ऐसा हुआ है। जब मैं पानी भर रही थी तब गलती से मेरा बर्तन उनके बर्तन को टच कर गया। तो उन्होंने मुझे बहुत डाँटा। फिर मम्मी ने कहा कि क्या हो गया टच हो गया तो। गलती हो गई। अपना बर्तन धुल लो और नहा लेना फिर। उन्होंने ऐसा इसलिए किया क्योंकि वो बड़ी जात के थे और हमारे गाँव में ऐसे ही किया जाता है।

मुस्कान, चौथी, अज़ीम प्रेमजी स्कूल, मातली, उत्तराखण्ड

हमारे साथ इसलिए बुरा बर्ताव किया जाता है कि हम छोटी जाति के हैं। एक बार हमारे स्कूल में हमारे बड़े सर ने पूछा कि तुम किस जाति के हो। हमने स्पष्ट बताया कि हम इस जाति से हैं तो बड़े सर ने मुझसे कहा कि अपनी जाति को कभी छिपाना नहीं चाहिए। और एक बार हमारी क्लास के कुछ छात्रों ने हमसे पूछा कि तुम किस जाति के हो तो हमने स्पष्ट बता दिया कि हम इस जाति से हैं। तो उन्होंने हमसे कहा कि हमारे साथ मत खेला करो। तो हमने जवाब दिया कि तुम्हार खून और हमारा खून एक ही जैसा है। हमारी क्लास में कुछ दूसरी जाति के दोस्त हैं जो मुझसे ये बात कभी नहीं कहते और जो इस क्लास के पढ़ने में सबसे तेज़ लड़के हैं। बड़े लोग हमसे इसलिए बुरा बर्ताव करते हैं कि वे अपने रुपयों पर घमण्ड करने लगते हैं और उन्हें ये नहीं पता कि छोटी जाति के लोग ही उनके काम आते हैं। संविधान में लिखा है कि भारत में जातिवाद की भावना समाप्त हो गई है पर अभी लोगों के दिमाग में जातिवाद की भावना बसी है।

आलोक कुमार, नौवीं, स्वतंत्र तालीम, मालसराय केन्द्र, सीतापुर, उत्तर प्रदेश

ऐसा मेरे साथ नहीं हुआ। ना ही मेरे किसी दोस्त या रिश्तेदार के साथ ऐसा हुआ है। पर मुझे लगता है कि यह गलत है। किसी भी गरीब को छोटी-छोटी बातों में भला-बुरा नहीं कहना चाहिए। और जो हम खाना वेस्ट करते हैं उसे वेस्ट न करके किसी गरीब को दे देना चाहिए। कभी भी किसी गरीब की छोटी गलती पर उसे माफ कर देना चाहिए और उनके ऊपर अपना घमंड नहीं दिखाना चाहिए।

भरत शर्मा, आठवीं, होली एंजेल्स स्कूल, देवास, मध्य प्रदेश

हाँ, मैंने ऐसा बर्ताव तब देखा है जब मैं अपनी नानी के घर पर थी। मैं नानी के घर से दुकान जा रही थी तो सड़क के किनारे दो बच्चे बात कर रहे थे। एक लड़के के पापा दुकान चलाते थे और एक लड़के के पापा मज़दूरी करते थे। जिस लड़के के पापा दुकान चलाते थे वो कह रहा था कि हमारे पास तो बहुत पैसा है। मेरे पापा तो दुकान चलाते हैं और तेरे पापा तो मज़दूरी करते हैं। जिसके पापा मज़दूरी करते हैं वो लड़का निराश होकर चला गया।

आकृति, चौथी, अज़ीम प्रेमजी स्कूल, मातली, उत्तराखण्ड

एक बार की बात है। हम सब शादी में गए थे। हम खाना खा रहे थे। तब बाहर से एक गरीब औरत आई और उसके साथ में एक छोटा-सा बच्चा था। उसे भूख लग रही थी। वह खाना खाने आई थी। सब लोग उसको अजीब निगाहों से देख रहे थे। फिर शादी वाले घर के लोग आ गए और उसको डाँटने लगे और उसे बाहर भगा दिया। मुझे यह देखकर अच्छा नहीं लगा। उसके साथ ऐसा व्यवहार नहीं होना चाहिए था।

मोनिस पुष्पद, छठवीं, होली एंजेल्स हायर सैकेंडरी स्कूल, देवास, मध्य प्रदेश

कभी जब हम किसी दूसरे की कुर्सी पर बैठ जाते हैं तो वह पहले हमसे हमारी जाति पूछते हैं और कहते हैं कि तुम्हारी हिम्मत कैसे हो गई कि तुम हमारी कुर्सी पर बैठे। और जब हम अच्छे कपड़े पहनते हैं तो हमसे कहते हैं कि बाज़ार के कपड़े तो नहीं लगते, हमको तो ये ठेले के लग रहे हैं।

आनन्द यादव, आठवीं, स्वतंत्र तालीम, मालसराय केन्द्र, सीतापुर, उत्तर प्रदेश

गरीब लोगों के साथ अमीर ऐसा व्यवहार करते हैं जैसे कि हमारे बर्तन मत छुओ, और जिस बर्तन में तुमने पानी पिया है उसे धुलके लाओ। और तुमसे बदबू आ रही है।

समर, चौथी, अज़ीम प्रेमजी स्कूल, मातली, उत्तराखण्ड

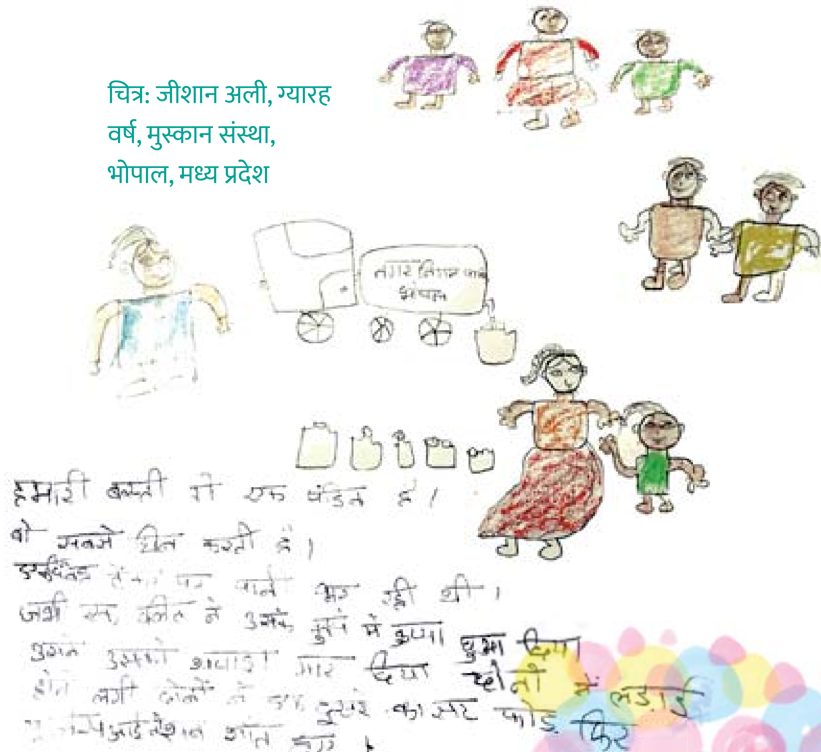

चित्र: जीशान अली, ग्यारह वर्ष, मुस्कान संस्था, भोपाल, मध्य प्रदेश

गाँव में शेर

अक्षरा कालिदास खोब्रागडे
सातवीं, ज़िला परिषद प्राथमिक शाला
मसाला तुकूम, चन्द्रपुर, महाराष्ट्र

चित्र: हबीब अली

हमारे गाँव में अक्सर शेर आता है। हमारा घर तो वैसे भी गाँव के बाहर है। घर के आजू-बाजू खेत-खलिहान हैं और सामने एक रस्ता है। रस्ते के दूसरी ओर हमारा खेत है। उसके पीछे पहाड़ी और घना जंगल है। शेर वहीं से आते-जाते रहता है।

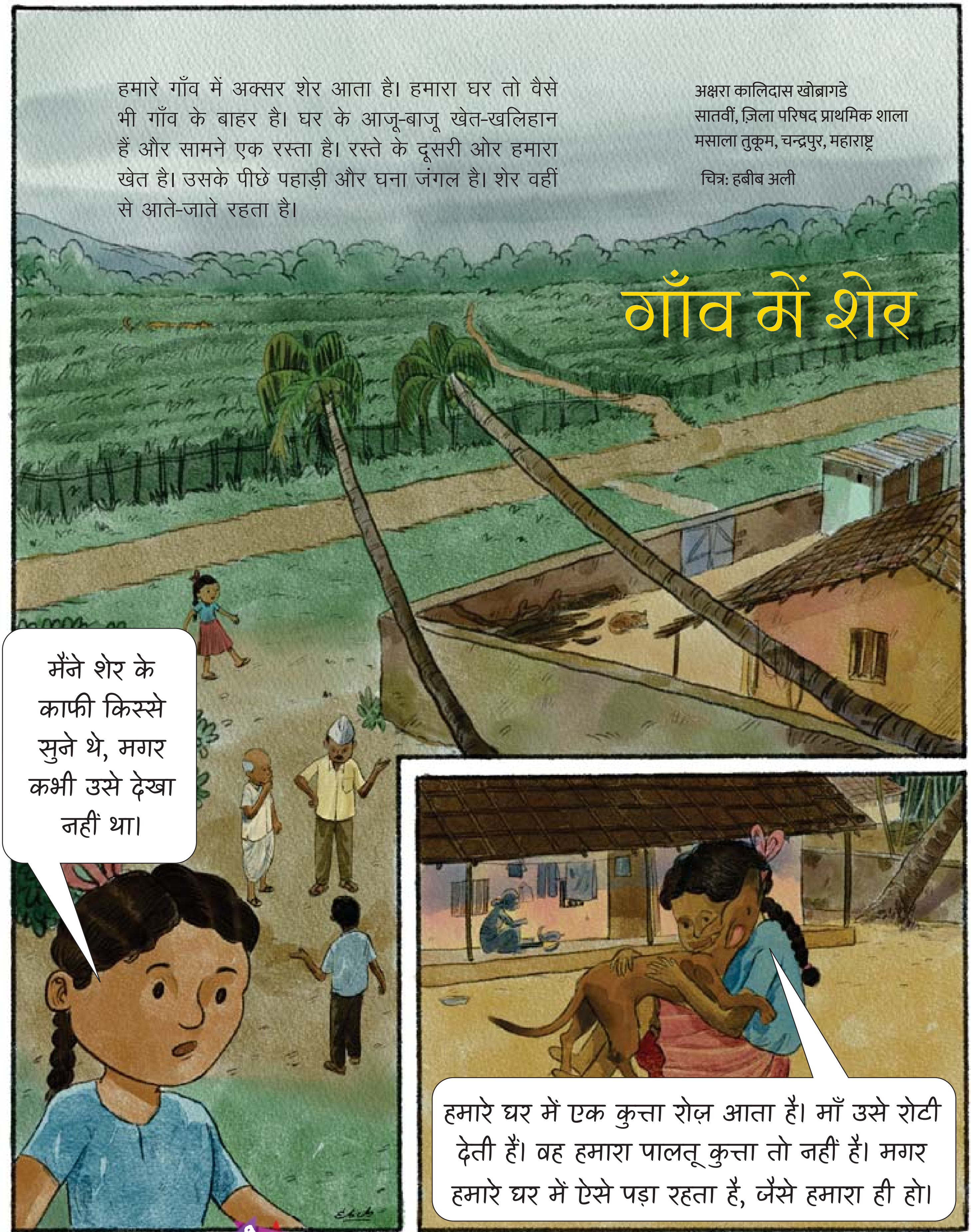

बरसात के दिन थे। बिजली चली गई थी। हम लोग जल्दी ही खाना खाके सोने के लिए चले गए थे। कुत्ता भी बरसात से बचने के लिए हमारे बरामदे में बैठा था।

अचानक ज़ोर-से आवाज़ आई। हम सब उठके बैठ गए। माँ ने दिया उठाया और हलके-से दरवाज़ा खोलकर झाँककर देखने लगीं। शेर आया था। कुत्ते और शेर के बीच लड़ाई हो रही थी।
अजी, उठो। शेर आया है, कुत्ते को ले जा रहा है। उठो, आवाज़ करो।
मम्मी!
मैं डर से चिल्लाई और रोने लगी।

पिता जी चिल्लाने लगे, ज़ोर-ज़ोर से बरतन बजाने लगे। पड़ोसी भी जाग गए और बरतन बजाने लगे। अचानक से हुई आवाज़ों से शेर हड़बड़ा गया। और कुत्ते को मुँह में लेकर उसने मेन गेट पर से छलाँग लगा दी।
मगर कुत्ता गेट पर अटककर गिर गया और बच गया।
मैंने शेर को अँधेरे में दूर भागते हुए देखा।
मुझे ये दिन हमेशा याद रहेगा। और शेर भी।
शेर के आने की दहशत मैंने पहली बार अनुभव की थी। गाँववाले किस प्रकार मिलकर इस दहशत का सामना करते हैं, ये भी मैंने समझा। और ये भी कि मिलकर रहने से हम शेर जैसे भयानक जानवर से भी बच सकते हैं।
मेरा पन्ना

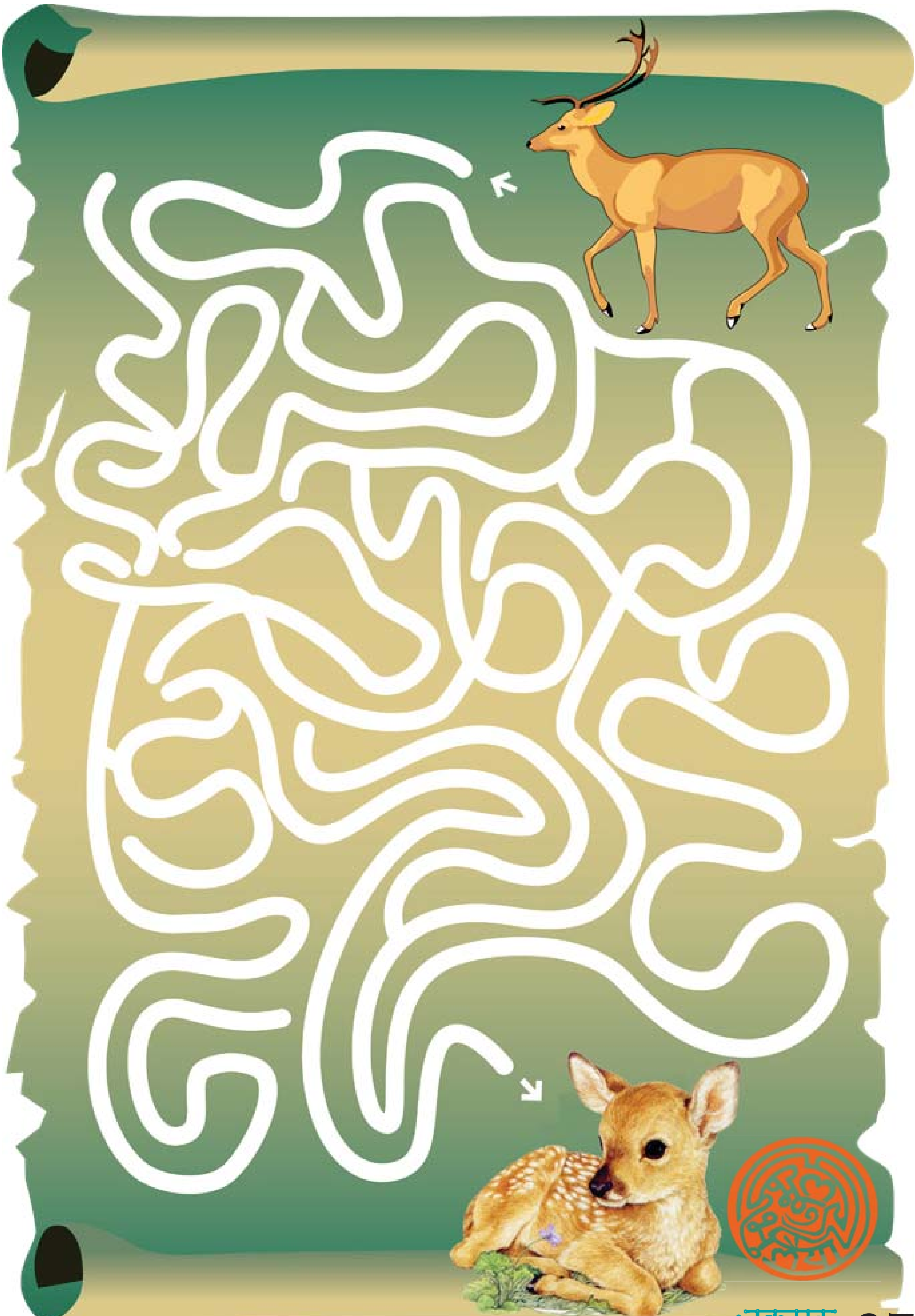

वो इतवार की सुबह थी। मैं देर से उठी थी।
मज़ेदार शुरुआत
आशु खाम्ब्लाई, ग्यारहवीं, बेसेंट अरुदलाई सीनियर सैकेंडरी स्कूल चेन्नई, तमिलनाडु
चित्र: आनन्द शिनॉय
जैसे ही मैं वॉशरूम जाने के लिए उठी मेरी होस्टल की सहेलियाँ मुझे देखकर हा, हा, हा करके हँसने लगीं।
मैं थोड़ा चौंकी।
?
क्या शाम हो गई?
हाँ, शाम हो गई अब तुम्हें ब्रुश करने की कोई ज़रूरत नहीं है।
ओह! तो अच्छा होगा कि मैं थोड़ी देर और सो जाऊँ... बहुत थक गई हूँ।
बिस्तर पर लेटते ही मुझे एहसास हुआ कि अभी तो सुबह हो रही है। मुझे बहुत सारे काम करने हैं। मैं इतना आलस नहीं कर सकती।
जैसे ही मैं बाहर गई मेरी सहेलियाँ फिर मुझे देखकर हँसने लगीं।
!?
कुछ तो हँसते-हँसते मेरे पीछे आने लगीं।
तुम लोग पागल हो गए हो क्या?
ओह माय गॉड!

मैं हक्की-बक्की रह गई।
लक्ष्मी, अकिला कहाँ हो तुम सब?
मैं तुम लोगों को छोड़ूँगी नहीं।
मैं गुस्से से लाल-पीली हो रही थी। तभी वो दोनों मुझे कमरे में ही मिल गए।
तुम दोनों, तुम्हारी बदमाशी...
सॉरी, सॉरी!
मुझे देखते ही वो हँसते-हँसते लोट-पोट हो गईं।
जैसे ही मैंने गुस्से का नाटक करते हुए उन्हें पीटना शुरू किया बाकी की सहेलियाँ भी कमरे में आ गईं।
इतवार के दिन की वो एक मज़ेदार शुरुआत थी।

चित्र पहेली
बाएँ से दाएँ
ऊपर से नीचे
ढाबा

दिए हुए बॉक्स में 1 से 9 तक के अंक भरने हैं। आसान लग रहा है ना? पर ये अंक ऐसे ही नहीं भरने हैं। अंक भरते समय तुम्हें यह ध्यान रखना है कि 1 से 9 तक के अंक एक ही पंक्ति और स्तम्भ में दोहराए ना जाएँ। साथ ही साथ, गुलाबी लाइन से बने बॉक्स में तुमको नौ डब्बे दिख रहे होंगे। ध्यान रहे कि हर गुलाबी बॉक्स में भी 1 से 9 तक के अंक दुबारा ना आएँ। कठिन भी नहीं है, करके तो देखो। जवाब तुमको अगले अंक में मिल जाएगा।

		9	1	2	5	3	6	
							1	
			3	4	7		5	9
		6	4	8	3	7		
	8				2			
4	3		5					6
	5	3	7	6		9	2	8
		4					7	
7					1	6		3

सुडोकू 59

जवाब पेज 86-87 पर

मेरे गाँव के खेल

वेट्टी हिड़मा
बारहवीं
नयानार, सुकमा, छत्तीसगढ़

चित्र: सरियम कपिल
छठवीं, शासकीय आवासीय पोटा केबिन
पाकेला, सुकमा, छत्तीसगढ़

मेरे गाँव में बहुत-से अलग-अलग खेल खेलते हैं।

जहाँ तक मुझे पता है... गुल्ली-डण्डा, चक्का, कोंगो काल, कूच-कूच कोरदी, देस तिड़िया ईसड़ती, बाटी, जीरको, कम्क्पेन्डुल, गूटेरी या बर्रेडांडी या नमक, पिट्टुल, इन्टुड़-पुन्टुड़, गोबर-डण्डा, छुपन-छुपाई, वेटा, सग्गा खेल, नक्सली-पुलिस और क्या-क्या दुनियादारी खेलते हैं। बहुत-से खेलों के तो कुछ नाम ही नहीं हैं।

इनमें से कुछ खेलों को तो आजकल हमारे गाँव में नहीं खेल रहे हैं जैसे कि कूच-कूच कोरदी, देस तिड़िया ईसड़ती, इन्टुड़-पुन्टुड़। क्योंकि पुराने खेल धीरे-धीरे भूलते जा रहे हैं। पहले बड़े-बड़े लड़का-लड़की खेलते थे लेकिन आजकल हम लोग क्रिकेट, फुटबॉल, वालीबॉल, कबड्डी जैसे खेल खेलने लग गए हैं। बाटी और चक्का दोनों खेलों को नक्सलियों ने बन्द कर दिया था क्योंकि मीटिंग के लिए

बुलाने पर हम बाटी या चक्का खेलते रहते थे। इसलिए वे बाटी जमा कर लेते थे और चप्पल से बनाए चक्के को जला देते थे। तब से हम बाटी और चक्का नहीं खेल रहे हैं।

आजकल बच्चे लोग सग्गा खेल, वेटा, गोबर-डण्डा, छुपन-छुपाई खेलते हैं। इन्टुड़-पुन्टुड़ खेल में ये गाते हैं:

इन्टुड़-पुन्टुड़ काका पुन्टुड़ा टा..
एटूरी आकी बुजो बाबले
बाबले-बाबले अण्डा
केयल कुसी डण्डा
डण्डा वाली पानी पूनी केत्तरा...

मेरा पन्ना

कबड्डी

सादिका
छठवीं, खुशबू समूह, दिगन्तर विद्यालय
भावगढ़, राजस्थान

हमारे मोहल्ले में बहुत सारे खेल खेले जाते हैं। पर मुझे सबसे अच्छा खेल कबड्डी लगता है। और हमारे मोहल्ले में सबसे ज़्यादा खेल कबड्डी ही खेला जाता है। कबड्डी में दो टीम होती हैं। दोनों ही टीमों में सात-सात लोग होते हैं और सात से ज़्यादा लोग भी हो सकते हैं।

कबड्डी कुछ लोग बुरी तरह से भी खेलते हैं और उनके लिए कबड्डी खेल हानिकारक भी हो सकता है। कुछ लोग अच्छी तरह से खेलते हैं जिसमें मज़ा भी आता है तथा स्वास्थ्य के लिए अच्छा भी होता है। इस खेल में एक टीम में से एक व्यक्ति जाता है और वह कबड्डी-कबड्डी बोलता जाता है। अगर वह व्यक्ति दूसरी टीम में से किसी एक या दो लोगों को हाथ लगाकर आ जाता है तो वो आउट हो जाते हैं।

कबड्डी खेलने के लिए बड़ा मैदान होना ज़रूरी है। हमारे स्कूल में भी बहुत बड़ा मैदान है और हमारे मोहल्ले में भी है। मुझे कबड्डी खेलना बहुत अच्छा लगता है। वैसे लड़कियों के लिए लोग कहते हैं कि क्या कबड्डी खेलेगी। लेकिन हमारे स्कूल में तो हमें खेलने का खूब मौका मिलता है।

चित्र: करन कुमार नाग
पाँचवीं, शासकीय आवासीय पोटा केबिन, पाकेला, सुकमा, छत्तीसगढ़

बेर और भालू

समीक्षा किशोर मंडलवार
सातवीं, ज़िला परिषद प्राथमिक शाला
मसाला तुकूम, चन्द्रपुर, महाराष्ट्र

चित्र: कनक शशि

मेरे घर का आँगन बहुत बड़ा है। आँगन की ओर बेर का पेड़ है। दिसम्बर के महीने में बेहद बेर आते हैं। बेर मीठे और रसीले भी हैं। छुट्टी के दिन हम दिन भर बेर के पेड़ के नीचे धूम मचाते हैं।

इस साल पेड़ बेरों से भर गया था। सुबह पके हुए बेर नीचे गिरे मिलते थे। हम वे बेर जमा करते और स्कूल ले जाते। फिर दोस्तों के साथ मिलकर खाते।

हमारा गाँव जंगल से लगकर है। जंगली जानवर अक्सर आते-जाते रहते हैं।

एक रोज़ सुबह माँ ने दरवाज़ा खोला तो देखा.....
ऐंई!
उठो!
माँ ने पापा को उठाया।
क्या हुआ?
उस आवाज़ से हम भी जाग गए।
ऊँ22 आ.. आ!!
हम सबने दो बड़े-बड़े भालुओं को आँगन में देखा।
यम्म यम्म
यम्म यम्म
हम बच्चे डर गए थे।
!?!?
हो...हो
जाओ! जाओ!
भागो!
पापा-मम्मी ने ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाकर भालू को भगा दिया।

हम लोग
काफी देर तक
घर से बाहर नहीं निकले।
दूसरे दिन भी यही हुआ।
लेकिन उस दिन दो नहीं, चार
भालू आए थे। वे अपने परिवार
के साथ बेर खाने आए थे।
उन्होंने ज़ोर-ज़ोर से पेड़
हिलाकर सारे पके बेर गिरा
दिए थे। और सब मज़े-से
खा रहे थे। पापा-मम्मी
को भी डर लगा।
"ये भालू तो जान लेकर रहेंगे। ये
पेड़ ही मुसीबत की जड़ है"। ऐसा
गाँववालों ने कहा।
और सब लोगों ने मिलकर
वो पेड़ काट दिया। अब ना
पेड़ है, ना बेर। मगर भालू
कभी-कभी आते ही हैं।
मेरा पन्ना

लॉकडाउन में यात्रा

दीपिका पवार
पाँचवीं, जीवन शिक्षा पहल
मुस्कान संस्था, भोपाल, मध्य प्रदेश

चित्र: सऐश गुप्ता, तीसरी, दि हेरिटेज स्कूल, गुरुग्राम, हरयाणा

बात लॉकडाउन के समय की है जब हमारे काम बन्द हो गए थे और खाना-पीना मुश्किल हो गया था। मैं और मेरा भाई पहली बार दिल्ली गए थे। हमें बहुत अटपटा-सा लग रहा था।

जब हम स्टेशन पहुँचे तो स्टेशन पर पैर रखने के लिए भी जगह नहीं थी। रेल में चढ़े तो वहाँ सीट नहीं थी। तब हमें बाथरूम के पास बैठना पड़ा। बाथरूम की बदबू से मुझे उलटी भी आ रही थी। तो मेरे भाई ने मुझे उठाया। फिर पानी से मुँह धुलाया। और तो और लोग वहीं से निकल रहे थे तो सबके पैरों की ठोकर हम दोनों को लग रही थीं। भोपाल से तीन बजे रात को रेल निकली। तो फिर से मुझे बहुत ज़्यादा उलटी होने लगी। तभी अचानक से एक भैया रेल के नीचे आ गया था। यह देखकर मेरा भाई डर गया था।

अगले दिन शाम को चार बजे हम दिल्ली पहुँचे। स्टेशन से हम एक रिक्शे में बैठकर बल्लमगढ़ गए। मेरा भाई मुझे वहाँ छोड़कर वापिस आ गया था। मैं बहुत रो रही थी। मैं पाँच-छह महीने वहीं रहकर बीनने का काम करती थी। मैंने पाँच महीनों में बीस हज़ार रुपए जमा कर लिए थे। फिर मैं भोपाल वापिस आ गई।

बिना बताए घूमना

शारदा उइके
पाँचवीं, जीवन शिक्षा पहल
मुस्कान संस्था, भोपाल, मध्य प्रदेश

एक साल पहले की बात है। मैं और मेरे दो दोस्त घर में बिना बताए घूमने निकले थे। हमने पूरा सफर पैदल चलते-चलते तय करने का सोचा था। सुबह करीब छह बजे हम हबीबगंज स्टेशन पहुँच गए। तीनों ने अनुमान लगाते हुए एक रेल लाइन पकड़ ली और उस पर चलते चले।

चलते-चलते मुझे डर भी लग रहा था। पता नहीं था कि जाना कहाँ है। पटरियों से ट्रेनें इधर-उधर गुज़र रही थीं। डर भी लग रहा था कि किसी ट्रेन के नीचे ना आ जाएँ। वैसे लॉकडाउन थोड़ा खुला था जिससे ज़्यादा ट्रेन नहीं चल रही थीं। जो स्टेशन बीच में आए थे वहाँ रुककर पानी पीकर हम आगे बढ़ते गए। धीरे-धीरे अँधेरा होने लगा। हमें थोड़ा डर लगने लगा। फिर हम तीनों आगे चलते गए। पटरियों पर पत्थर मारते-मारते दिन निकल गया और पता ही नहीं चला कि कब हम झाँसी पहुँच गए।

हम तीनों को लगा बहुत दूर आ गए हैं। इसलिए हम झाँसी में रुक गए। वहाँ एक अंकल से समय पूछा तो उन्होंने बताया कि एक बज रहे हैं। फिर हमने एक अंकल का पर्स चुराया और स्टेशन के बाहर बनी एक दुकान से खाना खाया। हम तीनों तीन-चार दिन तक एक रेल के डिब्बे में ही रुके। तीसरे दिन एक पुलिसवाले ने हमें पकड़कर पूछताछ की। और हमें भोपाल के छोटी खजूरी कला गाँव के अनाथ आश्रम में छोड़ दिया। तीन दिन वहाँ रहने के बाद हमें अनाथ आश्रम के लोगों ने हमारे घर छोड़ दिया। मेरी मम्मी और बुआ मुझे देखकर बहुत रो रही थीं।

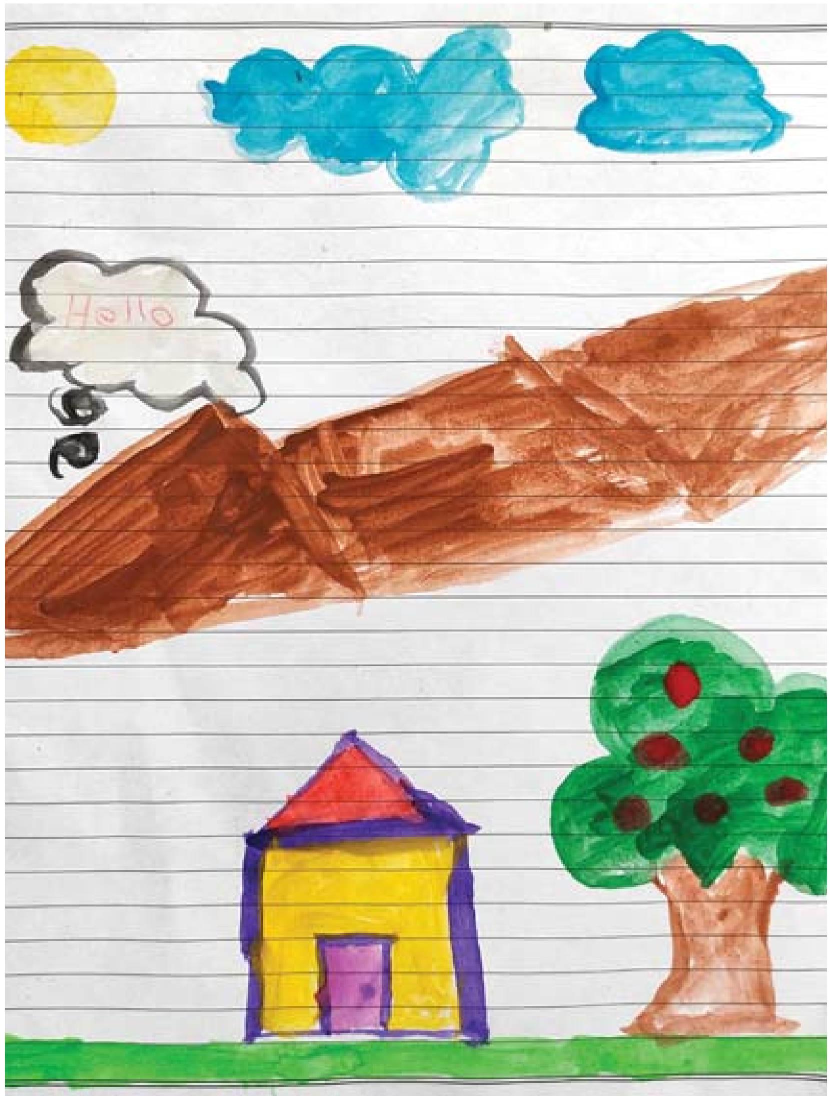

चित्र: दीपना देवादुला, दूसरी, राष्ट्रोत्थान विद्या केन्द्र, बेंगलूरु, कर्नाटका

श्लोक सरोज
तेरह वर्ष, मंज़िल संस्था, दिल्ली
चित्र: कनक शशि

जाति

मुझे बहुत बुरा लगा कि हमारे जैसे छोटी जाति के लोगों को नाली के पास बैठाकर खाना देते हैं और खुद के लोगों को साफ-सुथरी जगह में। तब मेरे मन में कई सारे सवाल थे-

क्या हम इन्सान नहीं हैं? क्या हमारा खून लाल नहीं होता? कि क्या हम उनके जैसे बोल नहीं सकते? जब सब कुछ समान है तो हमें जाति, धर्म के नाम पर बाँटा क्यों जाता है? आखिर जाति बनाई किसने है?

ये थी मेरी छोटी-सी उम्र की बड़ी बात जो मुझे आज भी सताती है।

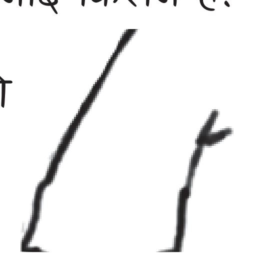

मेरा पसन्दीदा खेल

फ़िज़ा
खुशबू समूह, दिगन्तर विद्यालय
भावगढ़, राजस्थान

मेरा पसन्दीदा खेल सितोलिया है। हमारी ढाणी में भी सितोलिया खेलते हैं और हमें यह खेल बहुत पसन्द है। क्या तुम्हें भी यह खेल पसन्द है? इसे कहीं भी व कभी भी खेला जा सकता है और इस खेल को कितने भी लोग खेल सकते हैं।

इसमें जितने भी लोग होंगे उनको दो टीमों में बाँटकर खेलते हैं। इसमें 7 पत्थर व एक गेंद की आवश्यकता होती है। दोनों टीम तय करके एक बैटिंग करती है व एक फील्डिंग करती है। इस खेल को खेलना मुझे तो बहुत ही अच्छा लगता है।

यह खेल हम घर पर ही नहीं स्कूल में भी बहुत खेलते हैं। इसमें दौड़कर जब पिट्टू किया जाता है तो बड़ा मज़ा आता है। ऐसा लगता है कोई बहुत बड़ा काम कर लिया हो। नुकसान भी इस खेल में बहुत कम होता है। शरीर को ताकत खूब मिलती है और लंच में हम जो भी खाते हैं सब पच जाता है।

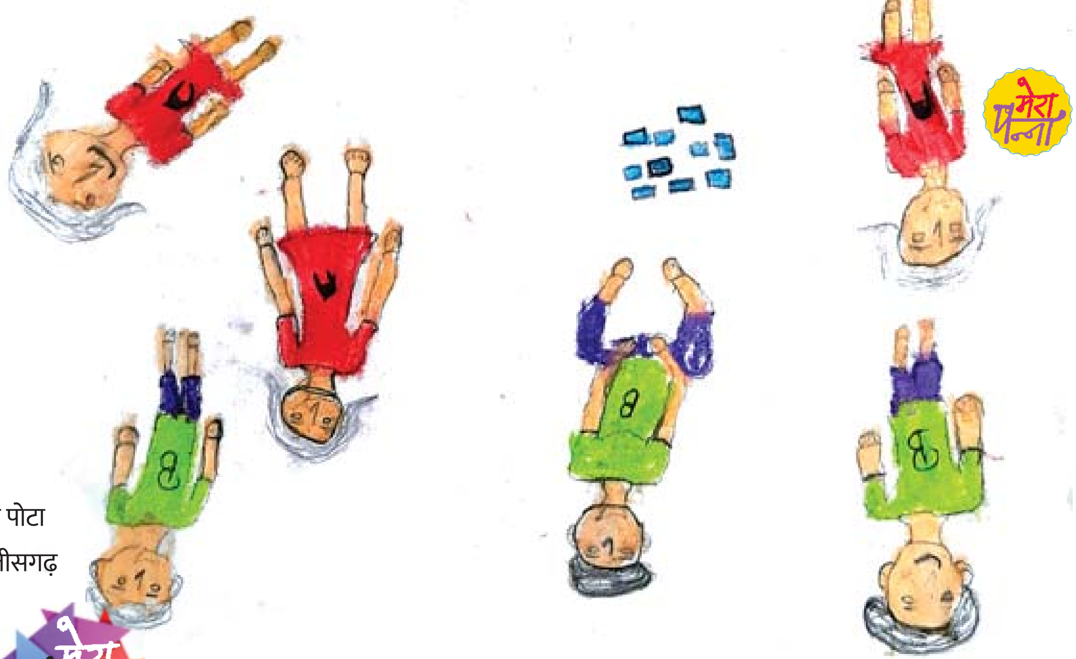

चित्र: करन कुमार नाग
पाँचवीं, शासकीय आवासीय पोटा
केबिन, पाकेला, सुकमा, छत्तीसगढ़

चित्र: रीना, आठवीं, ग्राम मांदीखोह, इटारसी, मध्य प्रदेश

चित्र: श्वेता, पाँचवीं, आशा सामाजिक स्कूल, वाराणसी, उत्तर प्रदेश

चित्र: अमन यादव, पाँचवीं, आशा सामाजिक स्कूल, वाराणसी, उत्तर प्रदेश

मेरे सपनों का

चित्र: श्रद्धा, तीसरी, आशा सामाजिक स्कूल, वाराणसी, उत्तर प्रदेश

घर

चित्र: मानसी, बारहवीं, माता भगवती चड्ढा निकेतन, नोएडा, उत्तर प्रदेश

लक्ष्मण मुचाकी, आठवीं, शासकीय आवासीय पोटा केबिन, पाकेला सुकमा, छत्तीसगढ़

चित्र: खुशी दोशी, छठवीं, प्रगत शिक्षण संस्थान, फलटण, सतारा, महाराष्ट्र

चित्र: कुशाग्र वर्मा, तीसरी, हल्दूचौड़, उत्तराखण्ड

चित्र: शिवतेज निकम, छठवीं, प्रगत शिक्षण संस्थान, फलटण, सतारा, महाराष्ट्र

चित्र: सुनिल मुचाकी, सातवीं, शासकीय आवासीय पोटा केबिन, पाकेला, सुकमा, छत्तीसगढ़

चित्र: अनुप्रिया, पाँचवीं, आशा सामाजिक स्कूल, वाराणसी, उत्तर प्रदेश

मेरे सपनों का घर

चित्र: झिर्नल सिटोले, पाँचवीं, शासकीय प्राथमिक विद्यालय, झिरन्या, गुलावड़ खरगोन, मध्य प्रदेश

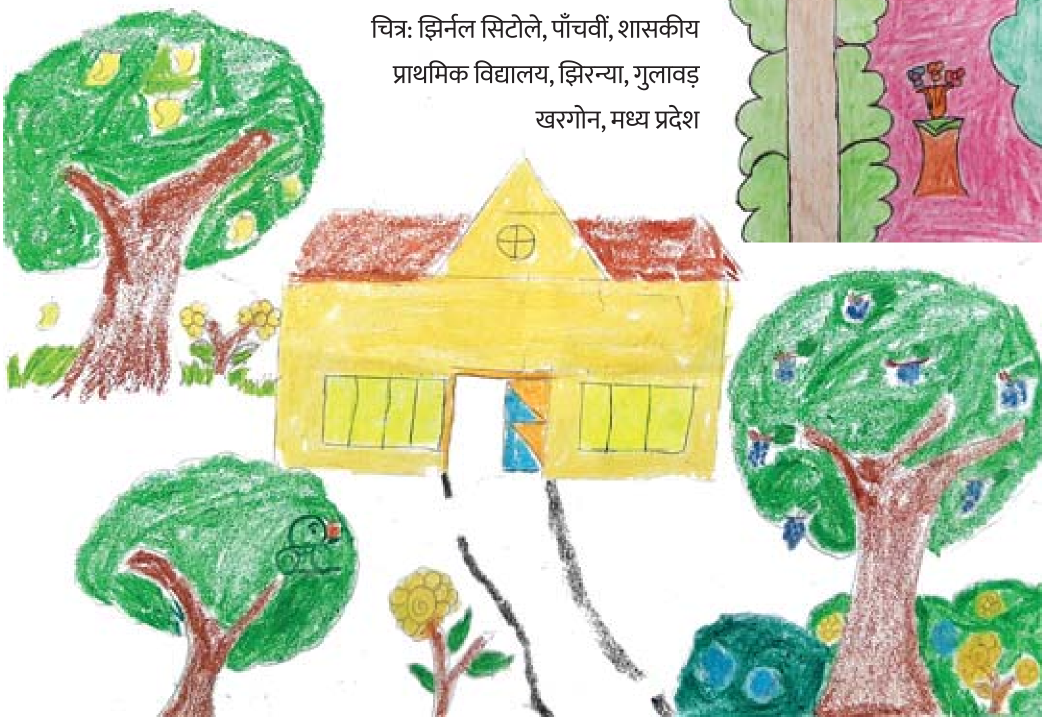

चित्र: सूरज नाग, चौथी, शासकीय आवासीय पोटा केबिन, पाकेला, सुकमा, छत्तीसगढ़

चित्र: प्राजक्ता काकड़े, छठवीं, प्रगत शिक्षण संस्थान, फलटण, सतारा, महाराष्ट्र

जंगल में शिकार घूमना

रमेश नाग
बारहवीं, हायर सैकेंडरी स्कूल
गादीरास, सुकमा, छत्तीसगढ़

चित्र: बुधराम पोयामी
सातवीं, शासकीय आवासीय पोटा केबिन
पाकेला, सुकमा, छत्तीसगढ़

मेरे गाँव में जब बीज त्यौहार होता है तब छोटे-बड़े सभी लोग शिकार घूमने जाते हैं। धनुष, लोहे का बण्डा, हँसिया जैसे बहुत सारे हथियार लेकर गाँव के सभी लोग छाँववाले पेड़ों के नीचे इकट्ठा होते हैं और एक साथ शिकार घूमने निकलते हैं। शिकार जाने से पहले ही कुछ लोगों को आगे भेज दिया जाता है। वो लोग अपनी-अपनी सुरक्षित जगह चुनकर चुपके-से खड़े रहते हैं। बाकी के लोग लम्बी लाइन बनाकर जाते हैं ताकि जानवर डरकर उस तरफ भागे जहाँ लोग छुपे हुए हैं। इस तरह छुपे हुए लोग उस जानवर को मार सकते हैं।

अगर गाँव के आसपास घूमना है तो कोई खतरा नहीं है लेकिन दूर जंगल में जाना है तो खतरा होता है। यह खतरा जंगली सूअर और बड़े-बड़े जानवरों से है। अगर सही समय पर शिकार जाते हैं तो कुछ न कुछ खरगोश, चिड़िया या तो फिर हिरण, जंगली सूअर मराकर ही लाते हैं और सारे लोग मिलकर खाते हैं। अगर किसी जानवर को मारना है तो इसके लिए बहुत सारे लोगों की ज़रूरत होती है। हिरण और जंगली सूअर को घेरकर मारना पड़ता है।

कभी-कभी शिकार घूमते समय बहुत डर भी लगता है क्योंकि अचानक सूअर मिलने से बहुत खतरा हो सकता है। इन्सानों को देखकर वो तुरन्त दौड़कर आता है और टुकड़ा-टुकड़ा करके मार देता है। शिकार तीन-चार दिनों तक चलता है। कभी-कभी महिलाएँ भी आदमियों के साथ शिकार घूमने जाती हैं।

इस त्यौहार में प्रत्येक घर में व्यवस्था करते हैं। घर-घर घूमकर लोग खाते-पीते हैं। लोग खूब नाच-गाना करते हैं। लगभग चार दिनों तक यह त्यौहार चलता है। शिकार केवल बीज त्यौहार में ही नहीं बल्कि ऐसे भी घूमने जाते हैं। इस समय तरह-तरह के जीव-जन्तु देखने को मिलते हैं। हर एक गाँव का अपना-अपना बीज त्यौहार होता है और सभी गाँववाले शिकार घूमने जाते हैं।

एक रात मेरे घर के खेत पर ल्याली यानी भेड़िया आया। मैंने उसे अपने घर की छत से देखा।

बिस्तर में पेशाब

सूफियान
सातवीं, समूह रोशनी, दिगन्तर विद्यालय, भावगढ़, राजस्थान
चित्र: शरवरी देशपाण्डे

मेरे को उसे देखकर बहुत तेज़ डर लगा। और उस रात में वह मुझे सपने में दिखा।

जब सुबह मुझे उठाया गया तो मैंने देखा कि
मैंने बिस्तर में पेशाब कर दी थी।
हा हा हा
तू इतना बड़ा हो गया है फिर भी बिस्तर में पेशाब करता है।
मुझे मेरी मम्मी से डर लग रहा था कि वो मुझे बहुत मारेंगी और लगा कि सभी के सामने मेरा मज़ाक बनाएँगी।
लेकिन मेरी सही बात तो कोई समझा ही नहीं कि मेरे साथ हुआ क्या है। उस दिन के बाद सारे घरवाले मेरी मज़ाक उड़ाने लगे और मुझे ऐसा लगा कि खेत में वो जानवर नहीं आता तो शायद मेरा मज़ाक नहीं बनता।

इतनी बड़ी लक्ष्मी

एक दिन मैं अपनी मम्मा के साथ घूमने गई थी। उस जगह का नाम था वृंदावन मंदिर। मंदिर की दिवारो पर चित्रकारी थी। जब में मंदिर की दिवारो को देख रही थी तो मेनें एक बहुत बड़ा हाथी देखा उस हाथी का नाम लक्ष्मी था। मैं पहले बहुत डरी फिर मेने उसको बिसकुट खिलाया वहा बहुत खुश हुई फिर हम दोनो ने बाते की मेने उसे अपना नाम बताया और अपने घर का पता बताया और मेने उसे कहा की मेरे घर आना और मे तुमे अपने सारे दोस्तो से मिलाऊगी। मेरे दोस्त तुमसे मिलकर बहुत खुश होगे। लक्ष्मी मेरी बाते सुनकर बहुत खुश हुई। खुश होकर अपनी सूँड उपर-निचे उठा रही थी। और मेरे सिर पर सूँड रख रही थी। बहुत देर हो चुकी थी। अब मुझे अपने घर जाना था मेरी मम्मा मुझे बुला रही थी। पर मुझे लक्ष्मी से और बात करने का मन था। मेने उसे बाए बोला और मैं अपने घर आ गई।

नाम -> जोया खान
कक्षा -> तीसरी
शाला – तक्षशिला इंग्लिश मिडियम स्कूल
सागर M.P

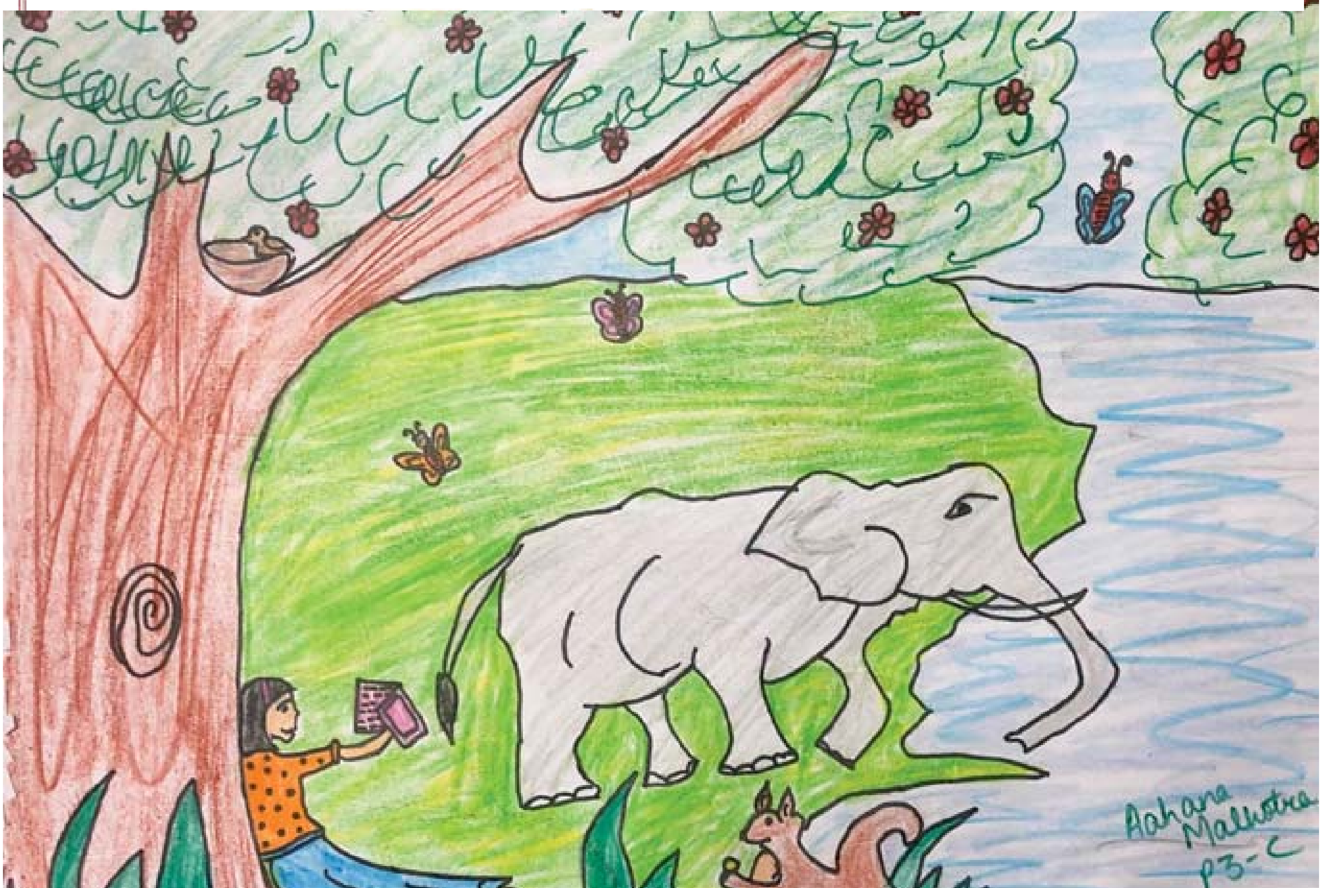

चित्र: अहाना मल्होत्रा, तीसरी, दि मॉर्डन स्कूल, बाराखम्भा रोड, गाज़ियाबाद, उत्तर प्रदेश

चिड़ियाघर की सैर

आस्था द्विवेदी, छठवीं, देवरिया, उत्तर प्रदेश

चित्र: अंबिका करंदीकर

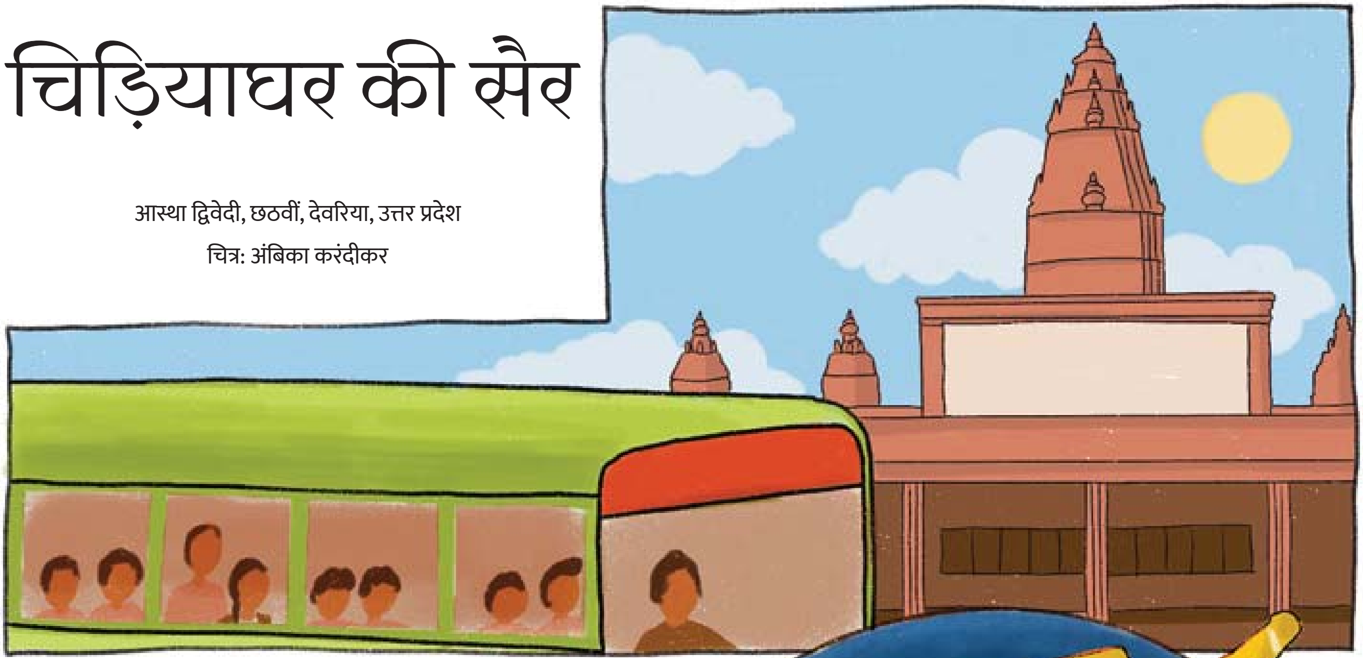

13 जून 2022 को हम गोरखपुर चिड़ियाघर गए। गोरखपुर चिड़ियाघर का नाम ‘अशफाक उल्लाह खाँ प्राणी उद्यान’ है। हम बस द्वारा गोरखपुर पहुँचे।

हम वहाँ 7D थिएटर में गए। वहाँ हमें एक चश्मा मिला जिसकी मदद से ही हम थिएटर में स्क्रीन पर दिखाई जानेवाली फिल्म देख सकते थे। उस चश्मे को लगाने से ऐसा लगता था जैसे कि सिनेमा के पर्दे की चीज़ें अपने पास में ही हों।

फिर हमें कुर्सी पर बिठाकर बेल्ट बाँधा गया और स्क्रीन में कई प्रकार की फिल्में जैसे रोलरकोस्टर, भुतिया आदि चलाई गईं और जैसे-जैसे चीज़ें हिलतीं उसी तरह कुर्सियाँ भी हिलतीं।

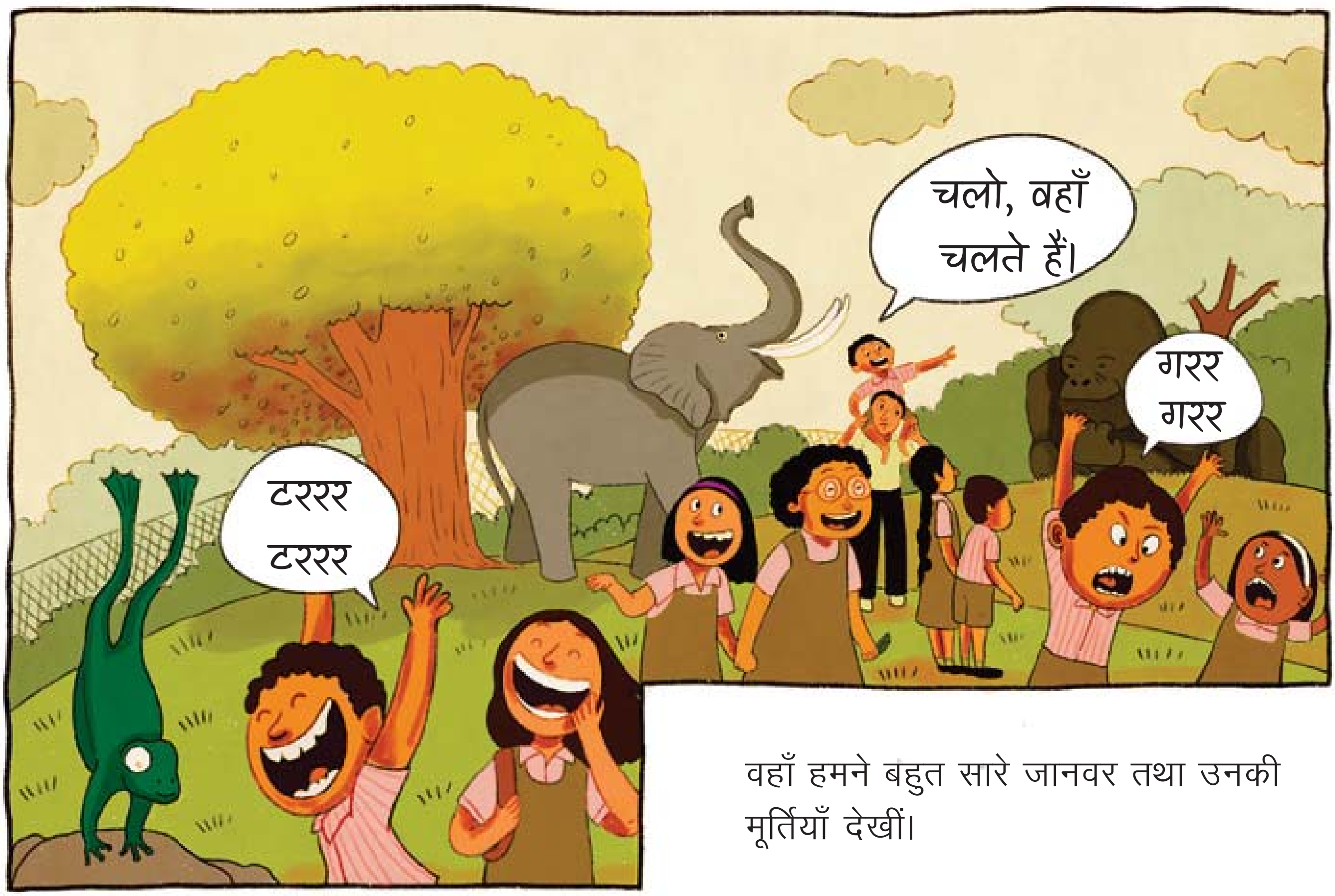

वहाँ हमने बहुत सारे जानवर तथा उनकी मूर्तियाँ देखीं।

वहाँ हर जानवर के बाड़े के पास उससे सम्बन्धित जानकारी भी प्रदर्शित की गई थी जो ज्ञानवर्धक थी।

फिर हम साँप घर गए, जहाँ विभिन्न प्रजातियों के साँप थे।

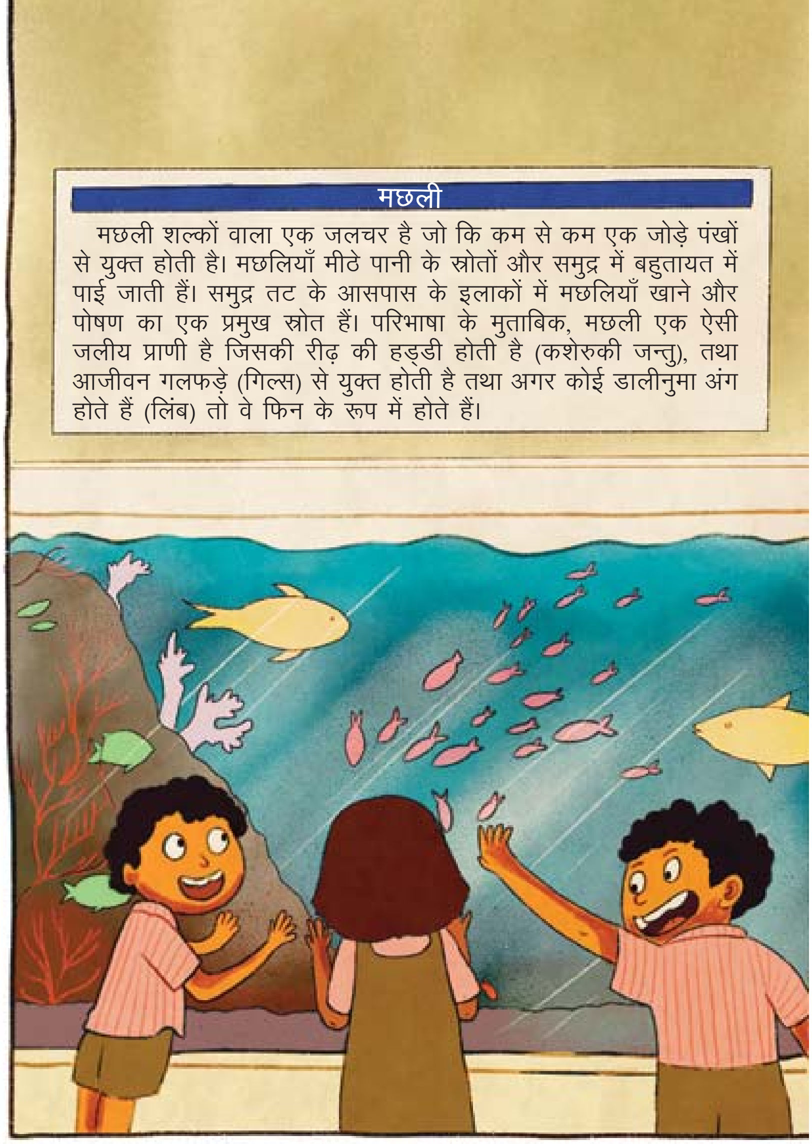

फिर हम मछली घर गए। वहाँ सुन्दर रंगीन मछलियाँ थीं जो हमें आकर्षित कर रही थीं। उनके बारे में भी वहाँ जानकारी लिखी हुई थी।

वहाँ एक कैंटीन भी थी जहाँ हमने डोसा खाया। हमें वहाँ बहुत मज़ा आया। शाम को हम बस द्वारा अपने शहर देवरिया आ गए।

मेरा पन्ना

जंगली सूअर की दावत

कमलेश कुमार पोड़ियामी
सातवीं, शासकीय आवासीय पोटा केबिन, पाकेला, सुकमा, छत्तीसगढ़

चित्र: हिड़मा कवासी, छठवीं, शासकीय आवासीय पोटा केबिन, पाकेला, सुकमा, छत्तीसगढ़

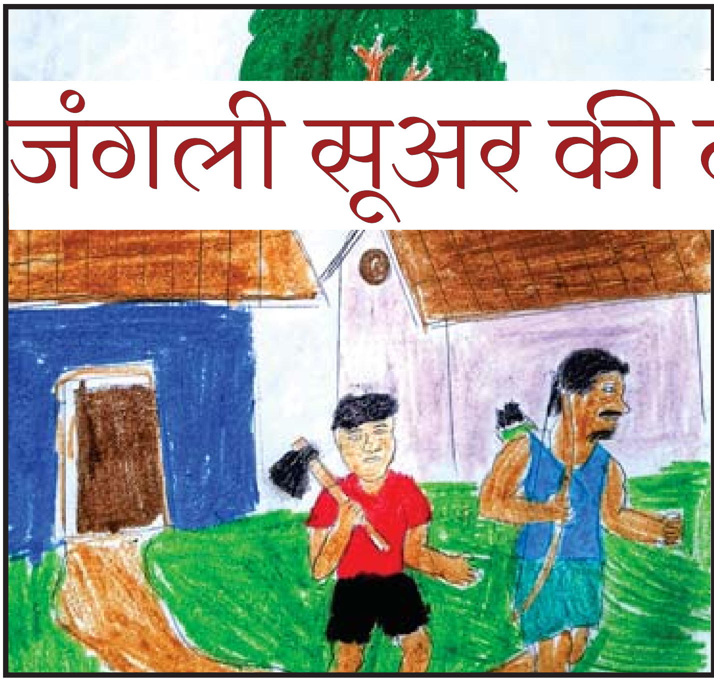

एक बार मेरे पिता जी के साथ मैं जंगल घूमने गया। जाते-जाते हम बहुत दूर तक चले गए।

अचानक सामने से एक जंगली सूअर आ गया। सूअर 5-6 साल का रहा होगा। वह बहुत गुस्से में था। सामने एक बरगद का पेड़ था।

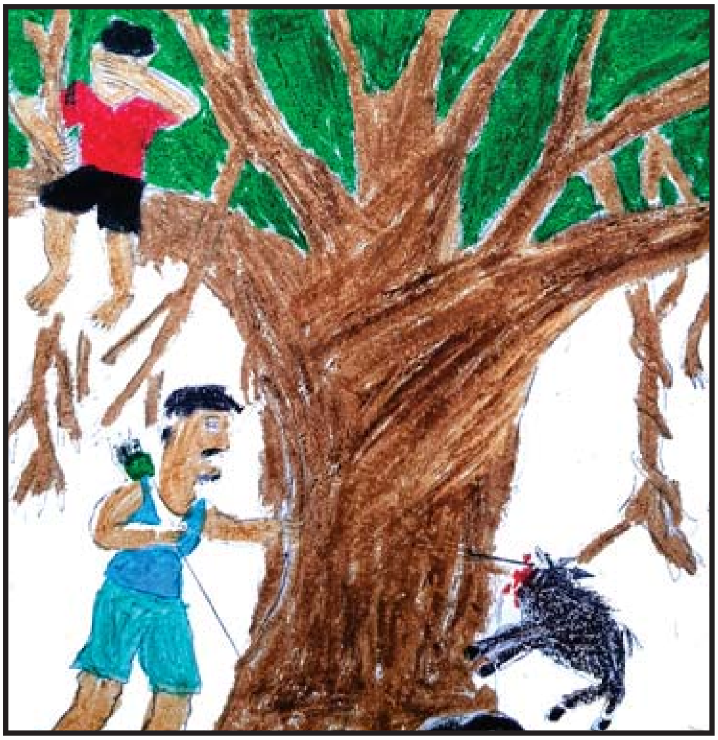

मुझे मेरे पिता जी ने उस पेड़ पर चढ़ा दिया। मेरे पिताजी और जंगली सूअर के बीच लड़ाई शुरू हुई। मैं तो अपना आँख बन्द कर लिया था क्योंकि मुझे बहुत डर लग रहा था।

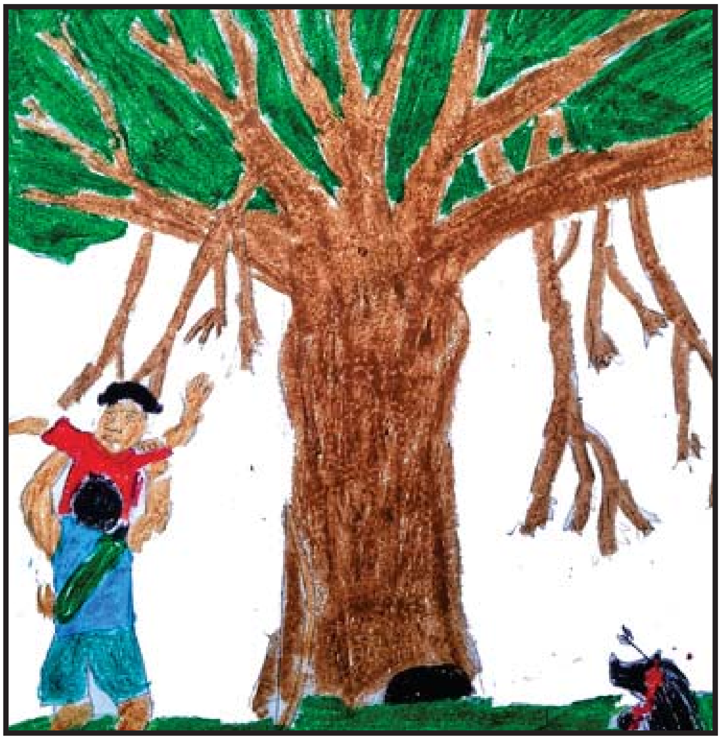

पिता जी ने टिक्का से तीर निकालकर जंगली सूअर पर वार किया। तीर एक कान से घुसा और दूसरे कान की तरफ से निकला। सूअर बहुत ज़ोर-से चिल्लाकर मर गया।

फिर पिता जी ने मुझे पेड़ से नीचे उतार दिया। हम दोनों बाप-बेटे जंगली सूअर को रस्सी से बाँधकर खुशी-खुशी घर लाए।

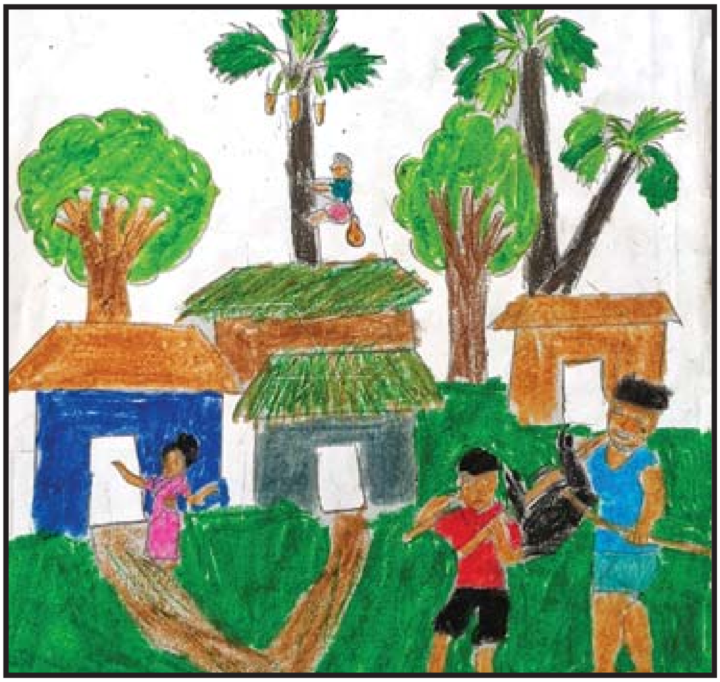

जंगली सूअर को माँ देखीं तो बहुत खुश हुईं। घर पहुँचकर मैं बड़े पापा और छोटे चाचा को बुलाने गया।

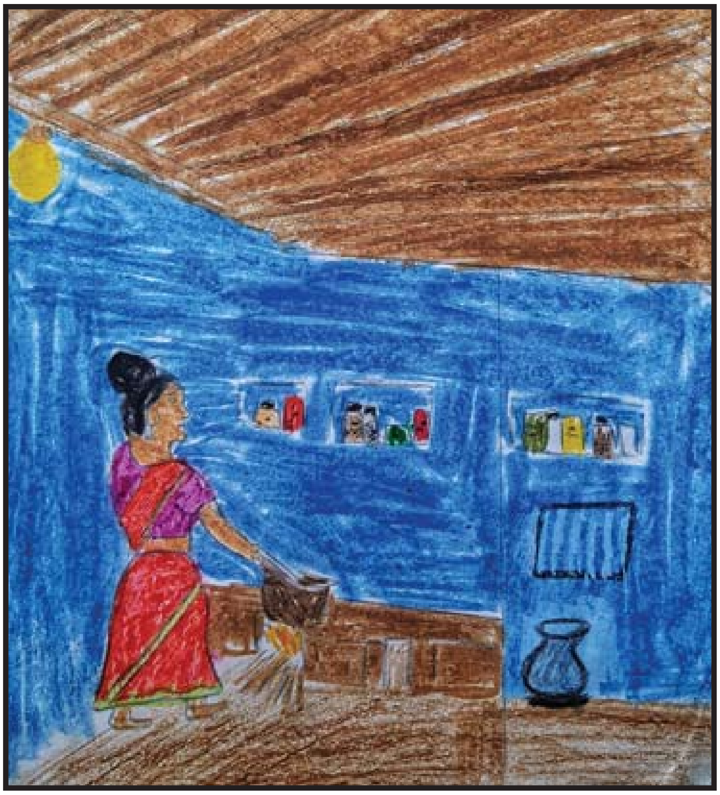

चाचा और बड़े पापा हमारे घर में जमा हुए। उसके बाद सूअर को भूंजे और फिर कटिंग किए।

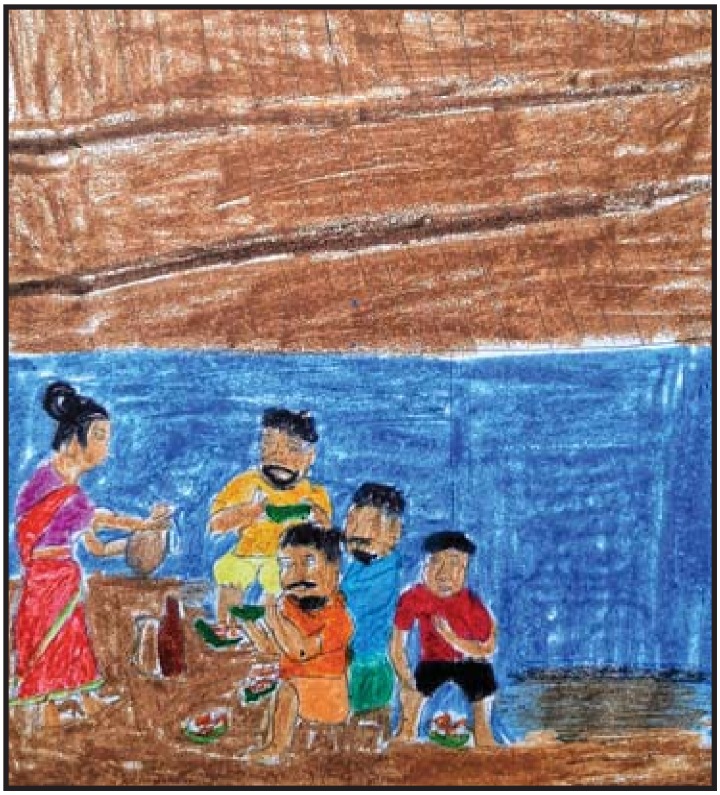

पार्टी मनाने के लिए ताड़ी रस और महुआ मंद ढूँढे। माँ ने सूअर का चाकना बना दिया। हम सभी बढ़िया खाए-पिए।

कुछ बुंदेलखण्डी खेल

चित्र: निशा पाल, आठवीं, शासकीय माध्यमिक शाला, जेरवारा, राहतगढ़, सागर, मध्य प्रदेश

गिनती दुनिया

निशा पाल
आठवीं, शासकीय माध्यमिक शाला
जेरवारा, राहतगढ़, सागर, मध्य प्रदेश

इस खेल में जितने बच्चे हों उतने खण्ड बनाने पड़ते हैं – आड़े और खड़े। फिर सब उसमें लाइन से खड़े हो जाते हैं। एक बच्चा बोलता है ‘गिनती’ यानी ‘पीछे होना’ है और ‘दुनिया’ कहने पर ‘आगे जाना’ है। यदि कोई बच्चा गिनती में पीछे और दुनिया में आगे नहीं जा पाता तो वो आउट हो जाता है। जो बच्चा सबसे आगे पहुँच जाता है वो विजेता होता है।

चित्र: मोनिका अहिरवार, सातवीं, शासकीय माध्यमिक शाला, जेरवारा, राहतगढ़, सागर, मध्य प्रदेश

साला का मुण्डा

वर्षा अहिरवार
सातवीं, शासकीय माध्यमिक शाला
जेरवारा, राहतगढ़, सागर, मध्य प्रदेश

इस खेल में सभी बच्चे एक गोले के अन्दर खड़े होते हैं। एक बच्चा बाहर खड़े होकर 'कुकड़ू-कूँ' बोलकर जिस बच्चे का नाम पुकारता है उसे तुरन्त गोले से बाहर निकलना होता है। यदि वह ध्यान नहीं दे पाता है तो सब बच्चे उसे परेशान करते हैं। इसलिए बचने के लिए बच्चों को खेल पर पूरा ध्यान देना होता है। जब तक बच्चा घेरे से बाहर नहीं हो जाता सभी उसे परेशान करते हैं।

छुक-छुक दाना

गंगा अहिरवार
आठवीं, शासकीय माध्यमिक शाला
जेरवारा, राहतगढ़, सागर, मध्य प्रदेश

इसमें कमरे के चारों कोनों में एक-एक बच्चा खड़ा होता है। पाँचवां बच्चा सबके पास जाकर कहता है 'छुक-छुक दाना'। कोने में खड़ा बच्चा कहता है 'बड़े घर जाना'। तब खड़े बच्चे आपस में अपने कोने बदल लेते हैं।

यदि दाना माँगने वाला बच्चा कोई कोना पकड़ लेता है तो उसका दाम खतम हो जाता है और जो कोना नहीं पकड़ पाता उसकी बारी आ जाती है।

चुंगी

हरिओम चढ़ार
आठवीं, शासकीय माध्यमिक शाला
जेरवारा, राहतगढ़, सागर, मध्य प्रदेश

चुंगी को साइकिल के ट्यूब से बनाया जाता है। उसे पतला-पतला काटकर धागे में पिरोकर गेंदनुमा बना लेते हैं। इस खेल को दो लोग खेलते हैं। चुंगी को पैरों से उछाला जाता है। चुंगी नीचे नहीं गिरनी चाहिए, ना ही उसे हाथों से पकड़ सकते हैं। एक बच्चा जितनी बार चुंगी उछालने में सफल होता है, दूसरे बच्चे को भी उतनी ही बार चुंगी उछालना होगा। यदि नहीं उछाल पाया तो वह हार जाएगा। जितनी उछालें बची हैं वह उसे उतारनी होंगी। इसी प्रकार उछालें चढ़ती जाएँगी।

चित्र: कृतिका चढ़ार, आठवीं, शासकीय माध्यमिक शाला, जेरवारा, राहतगढ़, सागर, मध्य प्रदेश

डायन

अनामिका राय
आठवीं, आशा सामाजिक स्कूल
वाराणसी, उत्तर प्रदेश
चित्र: शुभम लखेरा

एक बार मैं घूमते-घूमते रास्ता भटक गई और जंगल में चली गई। मुझे एक कुआँ दिखा जो बिलकुल सूख चुका था। फिर मैं आगे बढ़ी। जंगल बहुत घना था। मुझे डर लगने लगा।

तभी मुझे एक बूढ़ी औरत दिखी जो सूखी लकड़ियाँ बीन रही थीं।

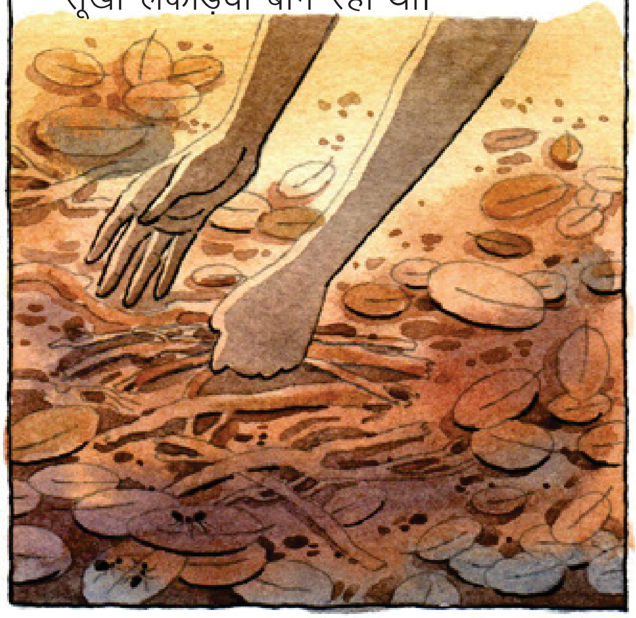

उन्होंने बहुत अजीब तरह से मुझे देखा और अपना काम करने लगीं। मैं भी उनके साथ लकड़ियाँ बीनने लगी। हम दोनों ने ढेर सारी लकड़ियाँ इकट्ठी कर लीं। उन्होंने लकड़ियों का एक गट्ठर बनाया और उसे लेकर जाने लगीं।

उन्होंने चुपचाप वो गट्ठर मेरे सिर पर रख दिया। वो मेरे आगे-आगे चलने लगीं और मैं उनके पीछे-पीछे।
क्या मैं इसे आपके घर तक पहुँचा दूँ?
मैंने देखा कि उनका घर बहुत पुराना लग रहा था। मानो वह सालों से बन्द पड़ा हो।

अन्दर जाकर मैंने देखा कि वहाँ ढेर सारी हड्डियाँ थीं और खोपड़ियाँ भी। मैं तुरन्त समझ गई कि वह बूढ़ी औरत एक डायन है। मैंने गट्ठर वहीं पटका और वहाँ से भागने लगी। डायन मेरे पीछे आने लगी।
अरे! यह क्या मैं तो सपना देख रही थी।
वह मुझे पकड़ने ही वाली थी कि मेरी नींद खुल गई।

चित्र: मुस्कान कुमारी, तीसरी, नरेन्द्रपुर परिवर्तन सेंटर, सिवान, बिहार

चित्र: खुशी कुमारी, सातवीं, परिवर्तन सेंटर, सिवान, बिहार

इमारतों का जंगल

चित्र व लेख: ऋषभ
पाँचवीं, श्री अरविन्दो नव शिक्षा केन्द्र
जोधपुर, राजस्थान

आजकल मैं अपने शहर में जहाँ भी जाता हूँ, वहाँ बस इमारतें ही इमारतें देखता हूँ। रोज़ बड़े-बड़े पेड़ों की जगहों पर ऊँची-ऊँची इमारतें बन रही हैं। जैसे शहर में हरियाली की जगह मकानों का जंगल उग आया हो। इसके कारण धरती पर पेड़-पौधों की कमी हो गई है। शुद्ध हवा और ऑक्सीजन की कमी के कारण हम बीमार

पड़ सकते हैं। सभी को बहुत सारी बीमारियाँ हो जाएँगी। फिर हम साँस कैसे लेंगे?

इस परेशानी से बचने के लिए हमें इमारतें खाली जगहों पर बनानी चाहिए, पेड़-पौधों वाली जगहों पर नहीं। हम बड़ी इमारतें शहर के बाहर बेकार पड़ी ज़मीन पर भी बना सकते हैं। हमें काटे गए पेड़ों की जगह दूसरे पेड़ लगाने चाहिए। अपने घर की खाली जगह पर बगीचे बनाने चाहिए। इससे हमें हमेशा अच्छी हवा और ढेर सारी ऑक्सीजन मिलेगी।

चित्र: राशि पाल, दसवीं, ब्रेंज एडु वर्ल्ड स्कूल, मेरठ, उत्तर प्रदेश

तेन्दुए से मुलाकात

अंकित जलाल
छठवीं, शिशु मन्दिर
ग्राम सीम, गरमपानी, नैनीताल, उत्तराखण्ड

हमारे गाँव में अक्सर तेन्दुए आते रहते हैं। इस बार जब तेन्दुआ आया था तब मैंने उसे देखा नहीं फिर भी मुझे पता चला कि वो गाँव में आया है। कैसे, रुको बताता हूँ।

एक दिन जब हम स्कूल को जा रहे थे तो हमें रोड के किनारे सूअर मरा दिखा। उस सूअर का पेट पूरा फटा था और उसके गले में दाँत के निशान थे। उसके आसपास मधुमक्खियाँ भी भिनभिना रही थीं। शाम को जब मैं लाइब्रेरी गया तो मैंने दीदी को बताया। दीदी ने कुछ दिन पहले ही बाघ और तेन्दुए में क्या फर्क होता है, उनके पकमार्क्स यानी पैरों के निशान कैसे होते हैं, हमें समझाया था। फिर दीदी को हम वहाँ लेकर गए जहाँ सूअर मरा था। वहाँ एक गिद्ध सूअर का माँस खा रहा था। और उसके आसपास एक लम्बपूछड़ी यानी रेड बिल्ट मैगपाय भी घूम रहा था। हमको देखकर दोनों उड़ गए।

हमें दीदी ने कहा कि चलो देखते हैं कि आसपास किसी के पैरों के निशान मिलते हैं क्या। तब हमें पॉटी दिखी जिसमें सूअर के बाल अच्छे-से दिख रहे थे। पॉटी इतनी फ्रेश थी कि जैसे अभी हगकर गया होगा। दीदी ने पहचाना कि ये तेन्दुए की पॉटी है और कहा कि तेन्दुआ यहीं कहीं आसपास छुपा होगा। फिर तो हम जो भागे तो शायद तेन्दुए से भी तेज़ भागे होंगे।

अगले दिन पता चला कि मेरे ताऊ की दो मुर्गियाँ गायब थीं। जब मैं ताऊ के घर गया तो वहाँ मैंने देखा कि मुर्गियों की जाली उखड़ी हुई थी और मुझे वहाँ किसी जानवर के पैर के निशान दिखे। वो सेम वैसे ही थे जो उस दिन दीदी ने हमें चित्र निकालकर बताए थे। और उसी शाम जब मेरी ताई घास काटने गई थीं तब उन्हें वहाँ मुर्गियों के पंख और खून दिखा। और फिर वो वहाँ से ज़ोर-से भागी क्योंकि उनके सामने वो जानवर आया जिसने मुर्गियों को मारा था। वो बाघ-बाघ चिल्लाकर घर आई और बोलीं बाघ ने ही सब जानवरों को मारा है। जब मैंने पूछा धारियोंवाला था या धब्बोंवाला तो उन्होंने बोला धब्बेवाला। अब आप ही बताओ वो तेन्दुआ हुआ ना?

उसके बाद कुछ दिनों तक गाँव में उसका आतंक फैला रहा। उसने एक जन की बकरी मारी, एक गाय के बच्चे को घायल कर दिया। हम शाम को लाइब्रेरी से घर जाते वक्त बहुत डरते थे। रास्ते में खेलने के बजाय हम डायरेक्ट घर जाते थे। रात को हम पटाखे फोड़ते थे। ज़ोर-ज़ोर से थाली की आवाज़ करते थे ताकि वो हमारे घर ना आए।

एक दिन तेन्दुए ने एक पहाड़ी काकड़ को मारा। काकड़ को ककड़ी मत समझना। वो तो हिरण जैसा

होता है। और एक बात काकड़ थोड़ा कुत्ते जैसे चिल्लाता है। फिर उस रात मेरे पापा, ताऊ, चाचा और गाँव के बड़े लोग टॉर्च लेकर ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाकर गाँव के चक्कर लगाए। उस दिन के बाद तेन्दुआ वापिस गाँव नहीं आया। शायद वह दूसरे गाँव गया होगा।

माथा पच्ची

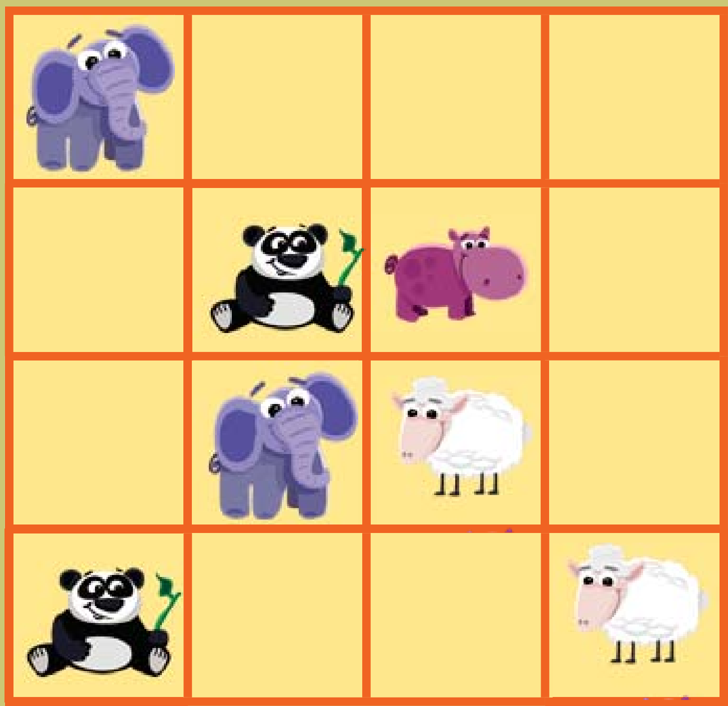

9. दी गई ग्रिड की हर पंक्ति व हर कॉलम में अलग-अलग जानवर आना चाहिए। इस शर्त के आधार पर खाली जगहों में कौन-से जानवर आएँगे?

10. यदि तुम सिर्फ बाएँ से दाएँ और ऊपर से नीचे की ओर चल सकते हो तो A से B तक जाने के कितने रास्ते होंगे?

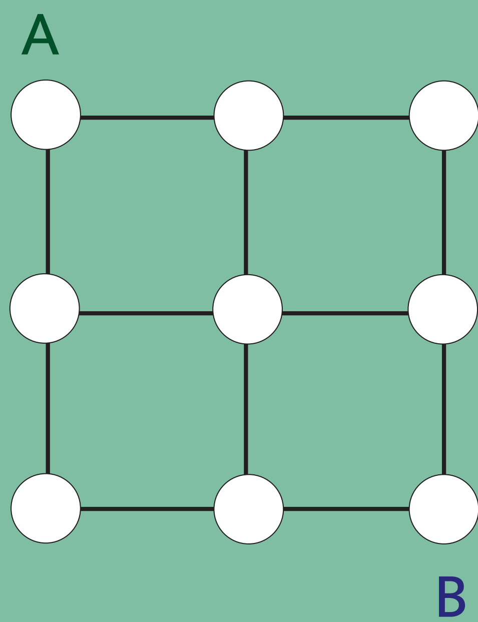

11. इला के पास 900 मिलीलीटर दूध से भरा एक जग है और 100 मिलीलीटर वाले कुछ मग हैं। यदि वह हरेक मग का सिर्फ 1/3 भाग ही भर सकती हो तो सभी मगों में बराबर-बराबर दूध देने के लिए उसे कितने मगों का इस्तेमाल करना होगा?

12. ढाई किलो सेब का दाम 120 रुपए है। यदि तुमने आधा किलो सेब खरीदकर फलवाले को 100 रुपए दिए तो वह तुम्हें कितने रुपए वापिस करेगा?

फटाफट बताओ

पैर कटे तो नग बने, सिर कटे तो गर
कट जाए यदि कमर तो, बन जाए वह नर

(नगर)

कठोर है पर पत्थर नहीं
जल है मगर समुद्र नहीं
जटाएँ हैं पर योगी नहीं
मीठा है मगर शक्कर नहीं

(नारियल)

फटाफट बताओ

काली-काली उसकी वर्दी
धीमी उसकी चाल
हर घर में वह फिरे घूमती
जैसे हो कोतवाल
(चींटी)

पानी जैसा मेरा रूप
सुखा न पाए मुझको धूप
([illegible])

रक्षक सन्दूकों के पट के
बन्द द्वार पर भी लटके
(ताला)

पीले मकान में चोर हैं अनेक
न हो विश्वास तो खोल के देख
(पपीता)

छह सखियाँ अलबेली-सी
एक-एक करके आतीं
कोई तपाए, कोई कँपाए
कोई मन को भाती
(ऋतुएँ)

13. समीर एक चौराहे पर पहुँचता है। वहाँ से इन्दौर जाने वाला रास्ता पता लगाने के लिए वह साइनबोर्ड ढूँढता है और देखता है कि बोर्ड नीचे गिरा हुआ है। वह बोर्ड को उठाकर, थोड़ा सोचकर उसे सही दिशाओं की ओर इंगित करते हुए लगा देता है। उसने ऐसा कैसे किया होगा?

14. एक मुर्गी पिंजरे में अण्डे दे रही थी। वहाँ पर एक तरफ से कुत्ता आता है और दूसरी तरफ से शेर। तो बताओ मुर्गी को शेर खाएगा या कुत्ता?

15. दो अक्षरों का एक ऐसा शब्द है जिसमें यदि दो अक्षर और जोड़ दिए जाएँ तो वो और कम हो जाता है। तुम्हें पता है वो शब्द?

16. एक तस्वीर में 4 बच्चे पार्क में बैठे हैं। मनजीत, दिशा के बाईं ओर बैठा है। रुस्तम, दिशा और मनजीत के बीच में बैठा है। सारा, दिशा के बाईं ओर बैठी है। तस्वीर में बाईं ओर से दूसरे नम्बर पर कौन बैठा है?

17.

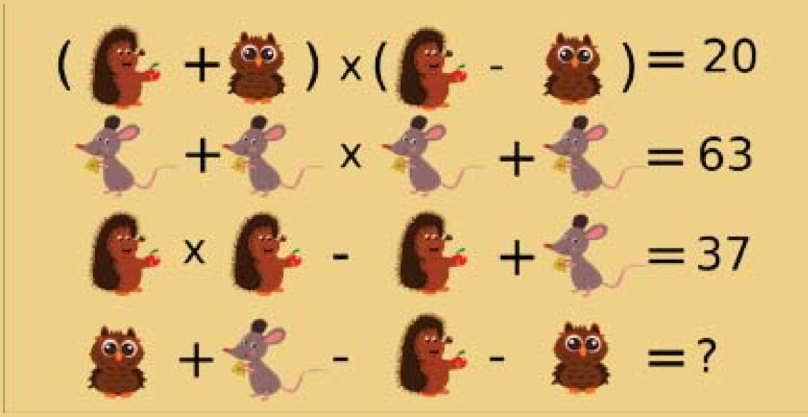

18. दी गई ग्रिड में भारत के कुछ लोकनृत्यों के नाम छिपे हुए हैं। तुमने कितने ढूँढे?

भ	र	त	ना	ट्य	म
गि	द्दा	मा	क	बि	णि
ना	घू	शा	थ	हु	पु
भां	म	ला	क	ज	री
ग	र	बा	ली	त्थ	ओ
ड़ा	कु	चि	पु	ड़ी	क

जवाब पेज 86-87 पर

चित्र: मितांश कारपेंटर, पहली, स्कॉलर्स एकैडमी, महेश्वर, खरगौन, मध्य प्रदेश

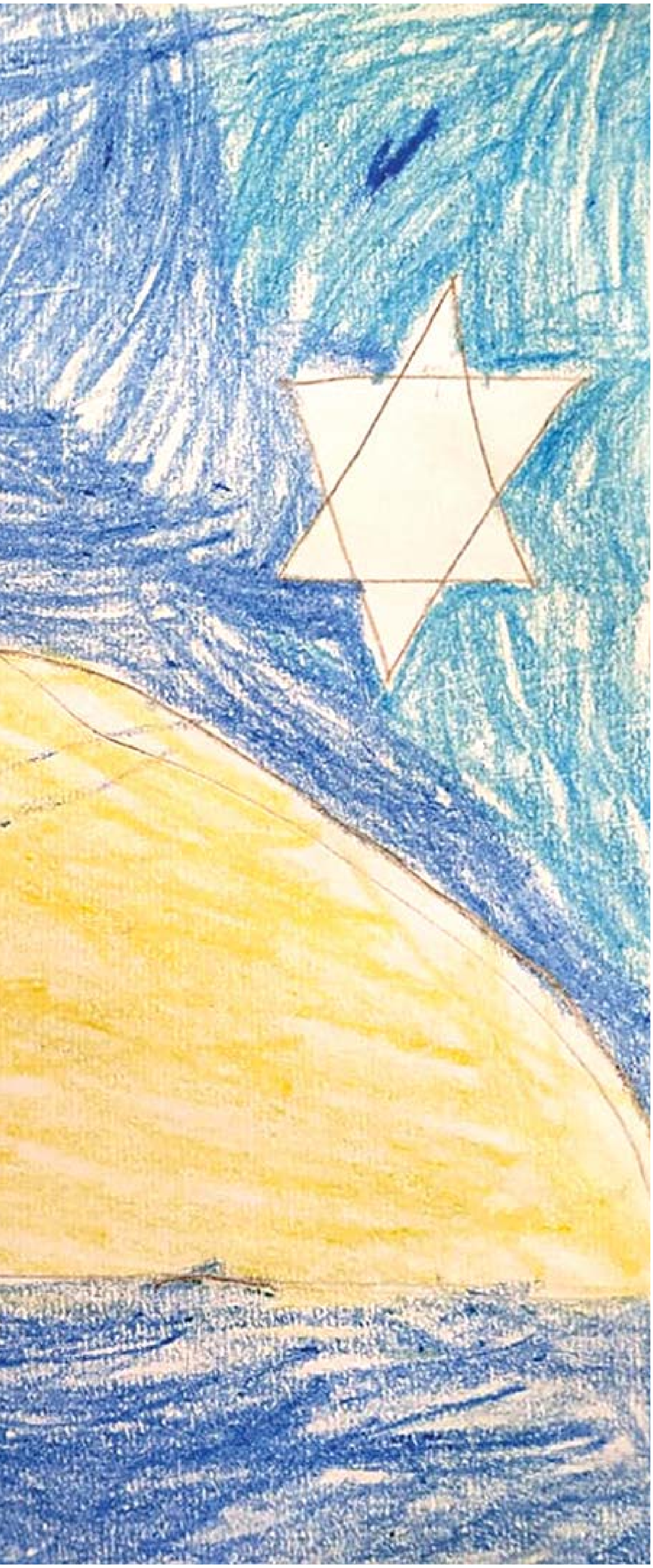

चींटियाँ और शरबत

अनम
चौथी, सावित्रीबाई फुले फातिमा शेख पुस्तकालय
भोपाल, मध्य प्रदेश

मेरी अम्मी ने मुझको बनाकर दिया शरबत। मैं उसे बड़े ही मज़े-से पी रही थी। तभी मेरे हाथ से गिलास गिर गया। मुझको बहुत ही बुरा लगा था। तभी बहुत सारी चींटियाँ आ गईं वहाँ। उन्होंने शरबत पूरा चट कर दिया। जब चींटी ने शरबत पी लिया तो मेरे को इतनी खुशी हुई कि बता नहीं सकती।

मेरा पन्ना

लॉकडाउन के समय

शनि पाल
पाँचवीं, कम्पोज़िट स्कूल
धुसाह, बलरामपुर, उत्तर प्रदेश

लॉकडाउन लगे हुए कुछ दिन बीत गए थे। उसके बाद हम सभी को बहुत परेशानी झेलनी पड़ी। मेरे बाबा और अम्मा को शुगर की बीमारी है। अतः चावल नहीं खा सकते। यद्यपि घर पे राशन की कमी न थी, फिर भी गेंहूँ पिसवाना ज़रूरी था और चक्की बन्द थी। बाज़ार में पिसा हुआ गेंहूँ बहुत महँगा था। इसके लिए बाबा ने ही रास्ता सुझाया। मम्मी रात को गेंहूँ भिगो देतीं और सुबह तक वो फूल जाता। चूँकि अम्मा और बाबा के दाँत कम हैं, अतः गेंहूँ को कूचकर पेस्ट बनाया जाता। तब उसमें नमक और नींबू मिलाकर वे खाते।

मेरा पन्ना

चित्र: भगवती, नौवीं, ग्राम मांदीखोह, इटारसी, मध्य प्रदेश

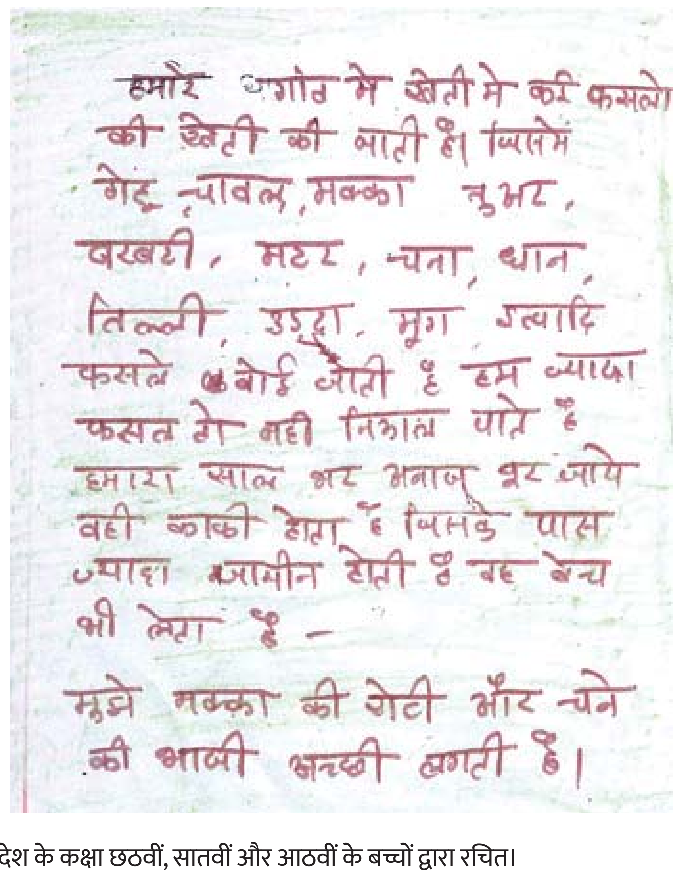
हमारे गांव मे खेती मे कई फसलो की खेती की जाती है। जिसमे गेहू, चावल, मक्का, तुअर, बरबटी, मटर, चना, धान, तिल्ली, उड़द, मूग इत्यादि फसले बोई जाती है हम ज्यादा फसल तो नही निकाल पाते है हमारा साल भर अनाज भर जाये वही काफी होता है जिसके पास ज्यादा जमीन होती है वह बेच भी लेता है -

मुझे मक्का की खेती और चने की भाजी अच्छी लगती है।

ग्राम मांदीखोह, इटारसी, मध्य प्रदेश के कक्षा छठवीं, सातवीं और आठवीं के बच्चों द्वारा रचित।

सोच में अन्तर

शहनाज़
स्वतंत्र तालीम
रामदुआरी सेंटर, लखनऊ, उत्तर प्रदेश

जो हमारे देश, गाँव या समाज के लोग हैं वो अक्सर अलग-अलग तरह के भेदभाव करते हैं। कभी जाति का, कभी ताकत का...। हमेशा कुछ ना कुछ ढूँढ निकालते हैं भेदभाव करने के लिए। जैसे अगर कोई किन्नर हो तो लोग उनसे भेदभाव करके उनको समाज से अलग ही कर डालते हैं। इसी तरह लोग औरतों को भी अक्सर आदमियों से कम समझते हैं। लेकिन वो यह नहीं समझते कि औरत किसी से कम नहीं है।

जो काम किन्नर करते हैं, जो धैर्य वो दिखाते हैं वह शायद हम में से कोई लोग ना कर पाएँ। तो हम क्यों उनके जीवन के लिए मुश्किलें बढ़ाएँ। हर इन्सान अपनी ज़िन्दगी की लड़ाई में उलझा है। ऐसे में हमें एक-दूसरे का जीवन आसान बनाने की कोशिश करनी चाहिए।

उनको भी इस समाज में खुली साँस लेने का उतना ही हक है, जितना कि हमारा। हम सब आखिर हैं तो इन्सान ही। फिर चाहे मर्द हों, औरत हों, बायसेक्सुअल या ट्रॉन्सजेंडर। हमें एक-दूसरे में जो अन्तर हैं उनसे ज़्यादा फोकस उन समानताओं पर करना चाहिए जो हम सब में हैं।

मेरा पन्ना

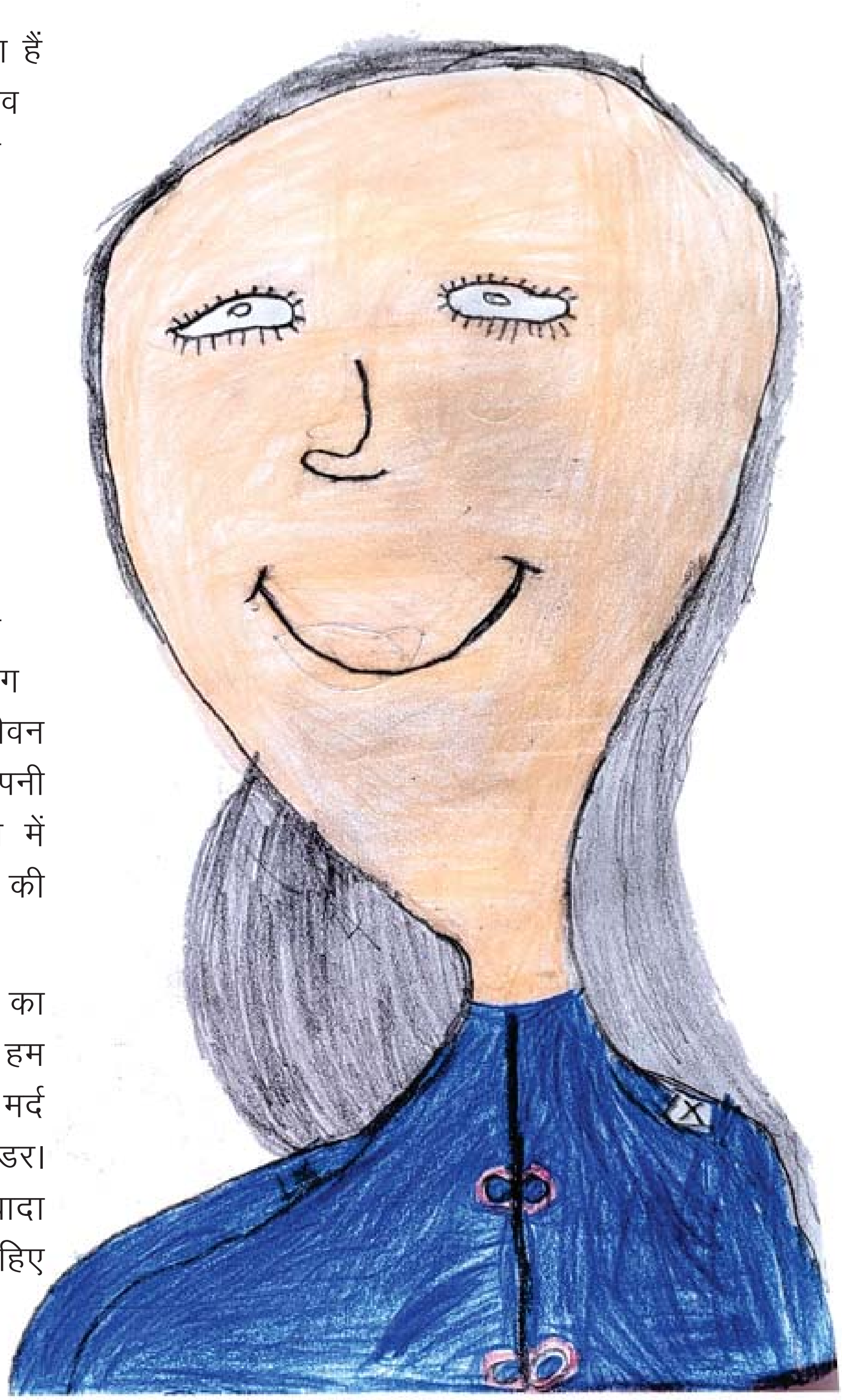

चित्र: मोहम्मद युसूफ खान, पहली, मदर टेरेसा स्कूल, शाहपुरा, डिण्डोरी, मध्य प्रदेश

चित्र: आस्था, नौवीं, महावीर पब्लिक स्कूल
सुन्दरनगर, मण्डी, हिमाचल प्रदेश

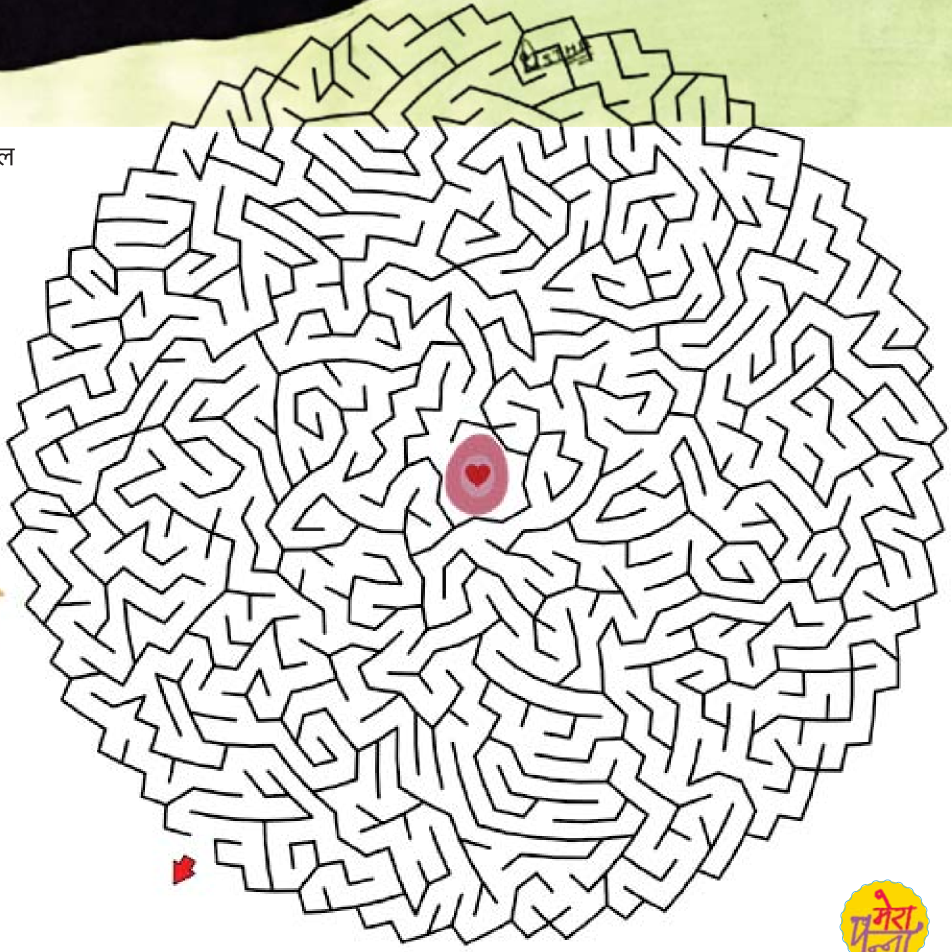

हमारे गाँव के आकाश में

पारस पवांर
सातवीं, रा. क. उ. प्रा. विद्यालय कोटबागी
चिन्थाली सौड़, उत्तराखण्ड

हमारे गाँव के आकाश में
एक पंछी उड़ती रहती
जब तब देखो उसको
दाना खाने मेरे घर-आँगन में आ जाती
डर-डर इधर-उधर देख
वह एक-एक दाना खाती
तनिक आहट पाकर वह फिर से
हमारे गाँव के आकाश में उड़ जाती

जब कभी देखो गर्मी में उसको
मुँह खोल वह साँस लेती
तब वह आकाश से उतरकर
पानी की चाहत में
मेरे आँगन में आती
मेरी दादी अम्मा गर्मी में
एक कटोरी पानी छत में रखतीं
पानी पीकर प्यास बुझाकर वो पंछी
हमारे गाँव के आकाश में उड़ जाती

मेरा पन्ना

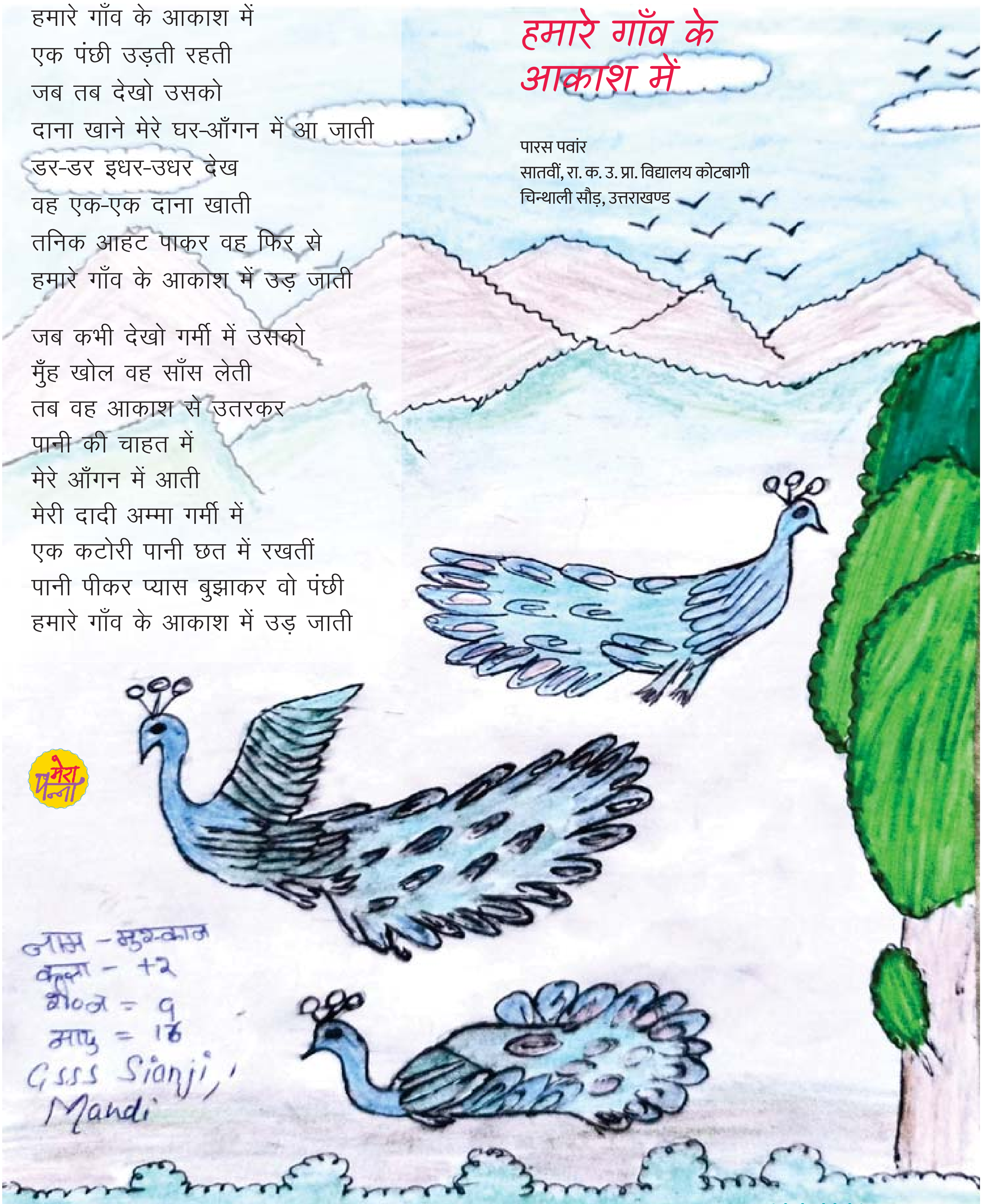

संग्रहकर्ता: कुलविन्दर कौर
संवादक: अंकुर
अंकुर लर्निंग कलेक्टिव के कलमकारों का संग्रह
(कलमकारों की उम्र 8 से10 साल)

चित्र: पूजा के मेनन

वी आर टू गो टू

वी आर टू गो टू इन द पेरिस
वन अ पेरिस
टू अ पेरिस
थ्री अ पेरिस
फोर अ पेरिस
ऑन द गेस्ट बेबी,
बेबी ऑन द गेस्ट
फ्रूट्स नेम
प्लीज़ चेंज बेबी,
प्लीज़ चेंज

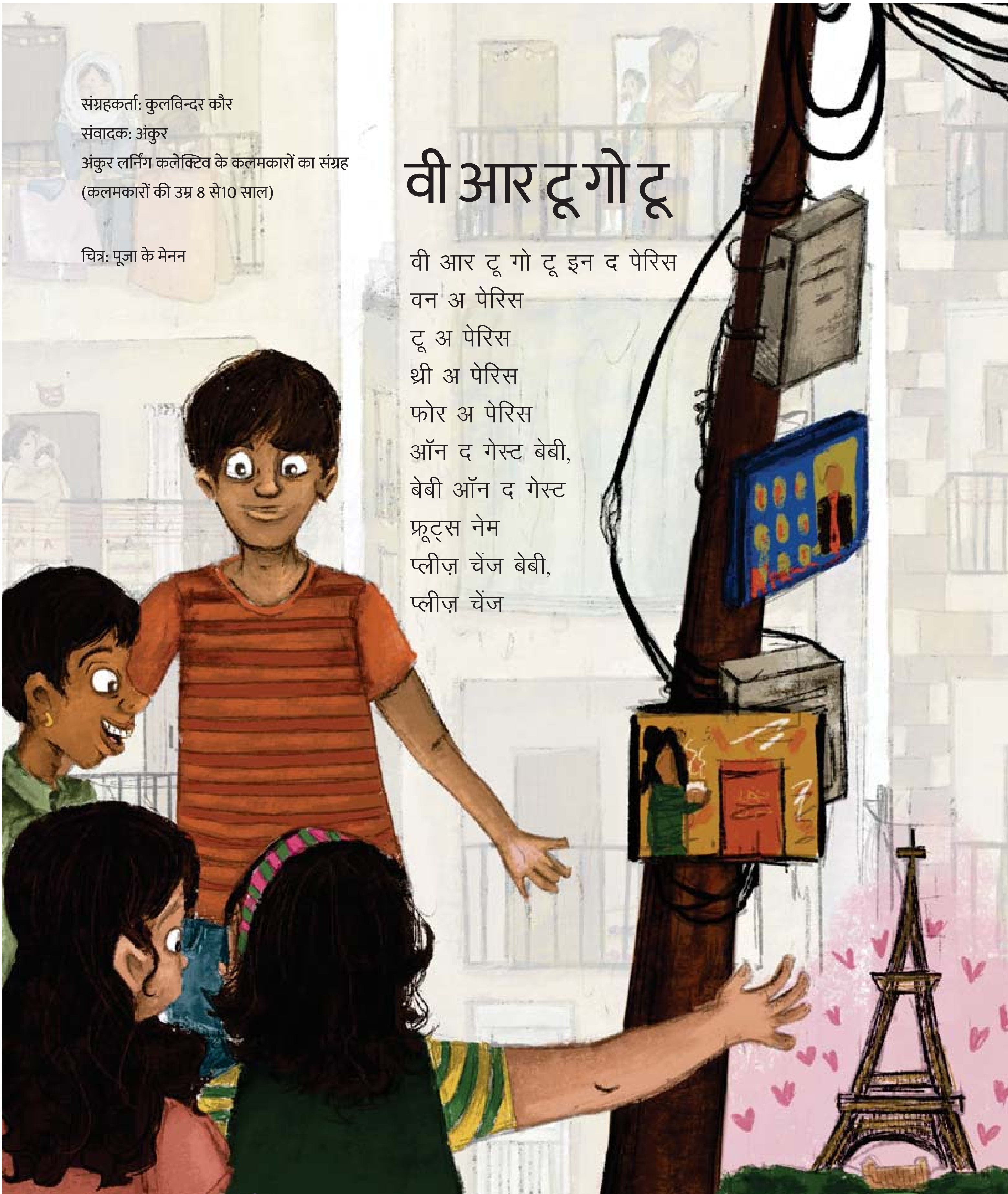

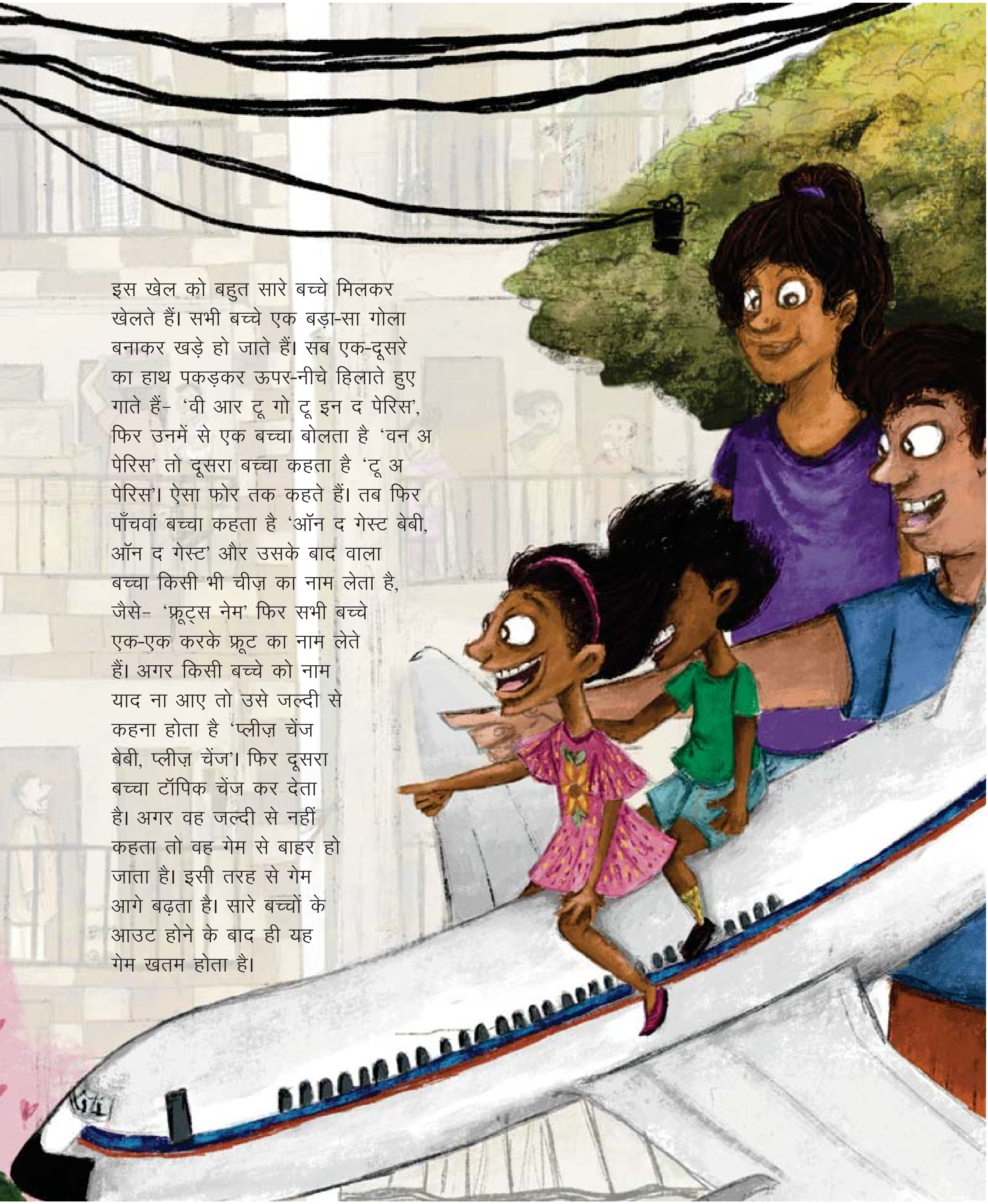

इस खेल को बहुत सारे बच्चे मिलकर खेलते हैं। सभी बच्चे एक बड़ा-सा गोला बनाकर खड़े हो जाते हैं। सब एक-दूसरे का हाथ पकड़कर ऊपर-नीचे हिलाते हुए गाते हैं- 'वी आर टू गो टू इन द पेरिस', फिर उनमें से एक बच्चा बोलता है 'वन अ पेरिस' तो दूसरा बच्चा कहता है 'टू अ पेरिस'। ऐसा फोर तक कहते हैं। तब फिर पाँचवां बच्चा कहता है 'ऑन द गेस्ट बेबी, ऑन द गेस्ट' और उसके बाद वाला बच्चा किसी भी चीज़ का नाम लेता है, जैसे- 'फ्रूट्स नेम' फिर सभी बच्चे एक-एक करके फ्रूट का नाम लेते हैं। अगर किसी बच्चे को नाम याद ना आए तो उसे जल्दी से कहना होता है 'प्लीज़ चेंज बेबी, प्लीज़ चेंज'। फिर दूसरा बच्चा टॉपिक चेंज कर देता है। अगर वह जल्दी से नहीं कहता तो वह गेम से बाहर हो जाता है। इसी तरह से गेम आगे बढ़ता है। सारे बच्चों के आउट होने के बाद ही यह गेम खतम होता है।

सुडोकू 60

दिए हुए बॉक्स में 1 से 9 तक के अंक भरने हैं। आसान लग रहा है ना? पर ये अंक ऐसे ही नहीं भरने हैं। अंक भरते समय तुम्हें यह ध्यान रखना है कि 1 से 9 तक के अंक एक ही पंक्ति और स्तम्भ में दोहराए ना जाएँ। साथ ही साथ, गुलाबी लाइन से बने बॉक्स में तुमको नौ डब्बे दिख रहे होंगे। ध्यान रहे कि हर गुलाबी बॉक्स में भी 1 से 9 तक के अंक दुबारा ना आएँ। कठिन भी नहीं है, करके तो देखो। जवाब तुमको अगले अंक में मिल जाएगा।

1	7	2	3		9			
			2			1	3	5
4	5	3	1	6			2	
2		4			3			7
				8			1	
6			7					
			8	3	4		7	
7	1		5		6			
	4			7		5		

चित्र पहेली

बाएँ से दाएँ

ऊपर से नीचे

जवाब पेज 86-87 पर

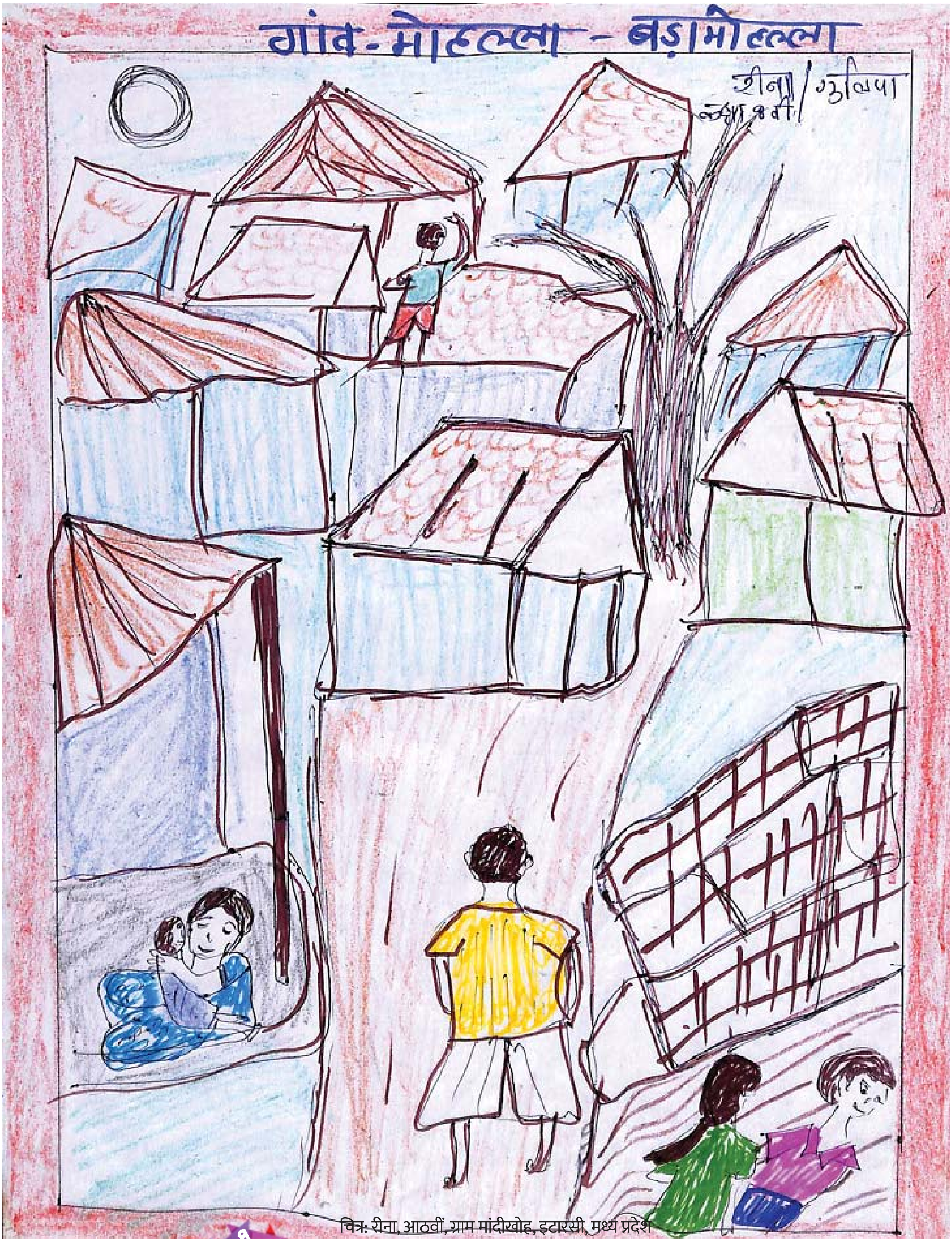

चित्र: रीना, आठवीं, ग्राम मांदीखोह, इटारसी, मध्य प्रदेश

मेरे पापा लोहार का काम करते हैं और मेरी माँ पापा की मदद करती हैं। वो जीरम से कोयला लाते हैं और गाड़ी में लादकर कोयले को करग करते हैं। और माँ गुमा (घुमा) देती हैं और पापा पजाते हैं। और साल में गाँव का पूरा काम करते हैं। साल में एक बार धान देते हैं और घर-घर में। और जब हम घर जाते हैं तो माँ कुली कमानी करने जाती हैं और हम लोगों की रोज़ी-रोटी कमाकर देती हैं।

मेरे बड़े भाई पढ़ रहे थे और बीच में छोड़ दिए थे। और फिर अभी काम करने गए और आदरा में काम करते हैं। हम दोनों बहनें आश्रम में अभी पढ़ रही हैं। मैं माँ के साथ काम करने में लगती हूँ। मैं बर्तन माँजती हूँ और पोछा लगाने, खाना बनाने, पानी लाने, कपड़ा साफ करने और पापा, माँ और बहन को खाना बाँटने में, बिस्तर लगाने में मदद करती हूँ। हम सब परिवार रविवार को मीटिंग जाते हैं और वहाँ पर बैठते हैं। मेरी दीदी गायिका है और मैं डाँसर हूँ।

मैं डाँसर हूँ!

बबीता मरकाम
चौथी, आवासीय बालिका पोर्टा केबिन छिंदगढ़, सुकमा, छत्तीसगढ़, शिक्षार्थ संस्था से प्राप्त

चित्र: शानवीर, दूसरी, गुरु रामदास पब्लिक हाई स्कूल, पाना, सिरसा, हरयाणा

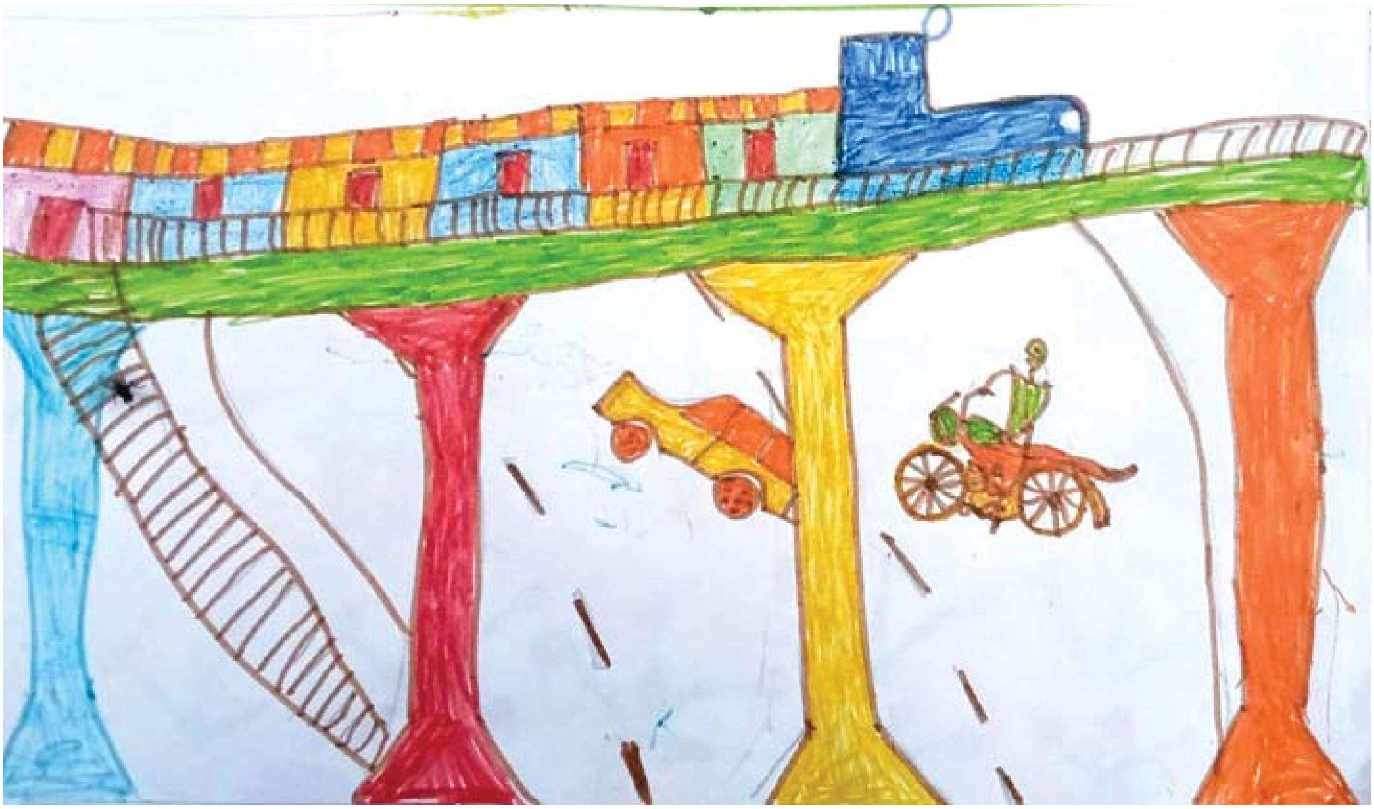

चित्र: विष्णु, स्वतंत्र तालीम, रमद्वारी, सीतापुर, उत्तर प्रदेश

चित्र: राजकुमार, स्वतंत्र तालीम, रमद्वारी, सीतापुर, उत्तर प्रदेश

दुर्घटना

बिलाल अहमद
छठवीं, कम्पोज़िट स्कूल
धुसाह, बलरामपुर, उत्तर प्रदेश

सोने से पहले मेरी मम्मी ने कहा, "सुबह जल्दी उठना। नानी के घर जाना है।" सुबह जब मैं उठा तो मम्मी ने कहा, "बेटा जल्दी तैयार हो जाओ और बोतल में पानी भर लो।" चलते-चलते दादी ने पचास रुपए दिए।

पापा-मम्मी और मैं गाड़ी में बैठकर जा रहे थे। रस्ते में गाड़ी रोककर पापा मिठाई लेने लगे। मैंने देखा एक बूढ़ा आदमी सड़क पार कर रहा था। तभी तेज़ आती हुई स्कार्पियो ने उसे टक्कर मार दी। उसका सर फूट गया। बहुत खून बहा और वो मौके पर ही मर गया।

रात को सोने के समय मैं बहुत डरने लगा। किसी तरह मुझे नींद आई तो वही बूढ़ा आदमी डराने लगा। मैं अचानक चिल्लाकर उठा। सब लोग जाग गए। तब मैंने देखा तो कोई नहीं था।

मेरा पन्ना

चित्र: इशिता पाण्डे, तेरह साल, बाल भवन सोसाइटी, वड़ोदरा, गुजरात

घड़ी की दुकान

दिलीप साहू
पाँचवीं, प्राथमिक विद्यालय धुसाह - प्रथम
बलरामपुर, उत्तर प्रदेश
चित्र: मयूख घोष

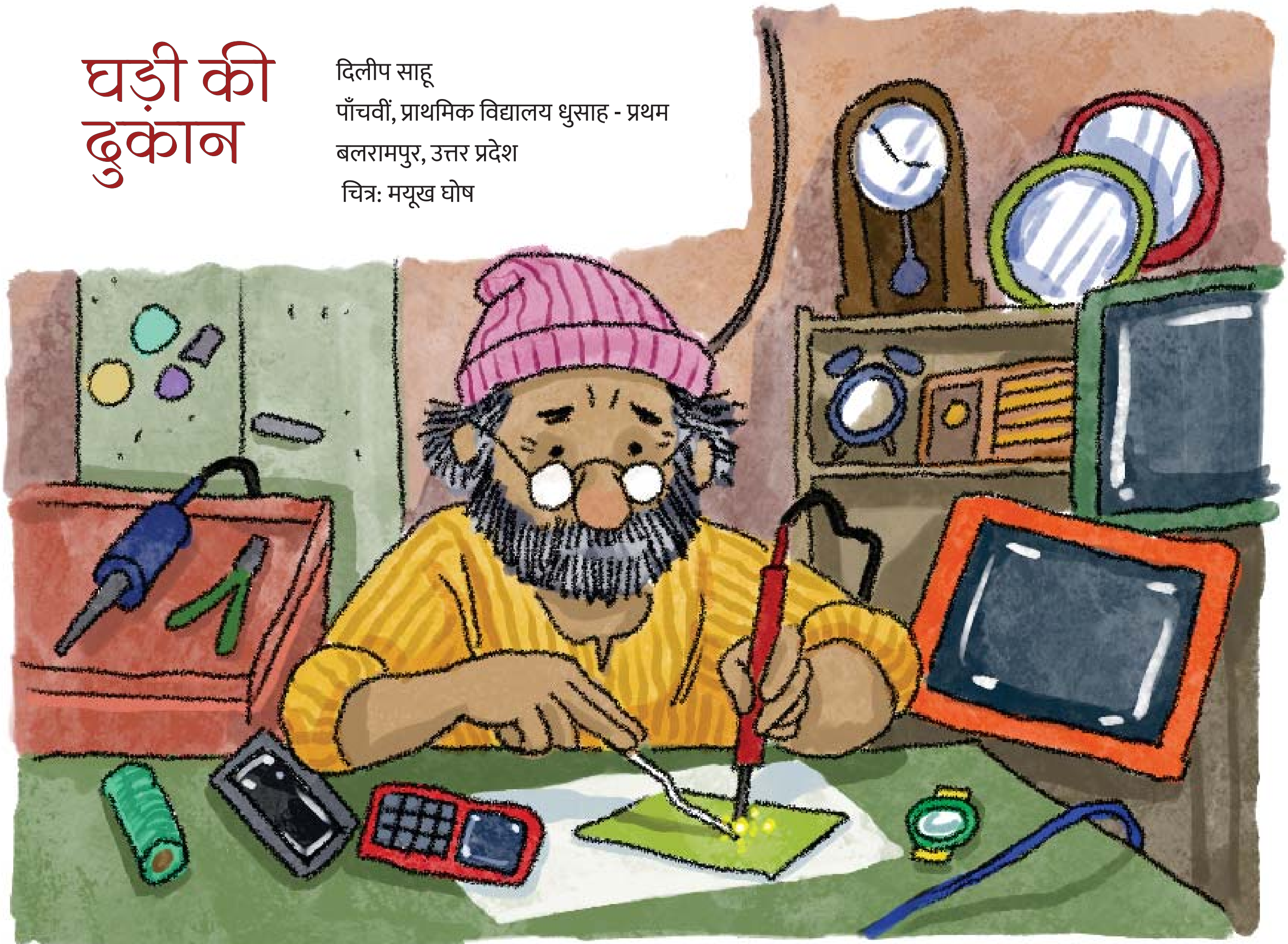

मेरे नाना की घड़ी की मरम्मत की दुकान है। लेकिन वो घड़ी का ही सामान नहीं रखते और भी सामान रखते हैं जैसे कि तारा, हीटर, पंखा, बोर्ड, पंखे के पर, एफ एम रेडियो, बाजा, चिपवाला बाजा, टॉर्च, छोटी बूफर, पंखे का कंडेनसर, चार्जर, चार्जर पिन, सिम, मोबाइल रिचार्ज। घड़ी के सामान में घड़ी का पट्टा, पिन, सुई, शीशा और कुछ औज़ार।

एक बार मेरी घड़ी आग में गिर गई। उसके हफ्ते भर बाद मुझे नाना के घर जाना था। इसलिए मैंने उस घड़ी को अपने बैग में रख लिया।

घड़ी का पट्टा पिघल गया था। उसमें जो प्लास्टिक का हिस्सा था वह भी पिघल गया था। शीशे पर धब्बे पड़ गए थे। नाना जी ने उनको बदल दिया।

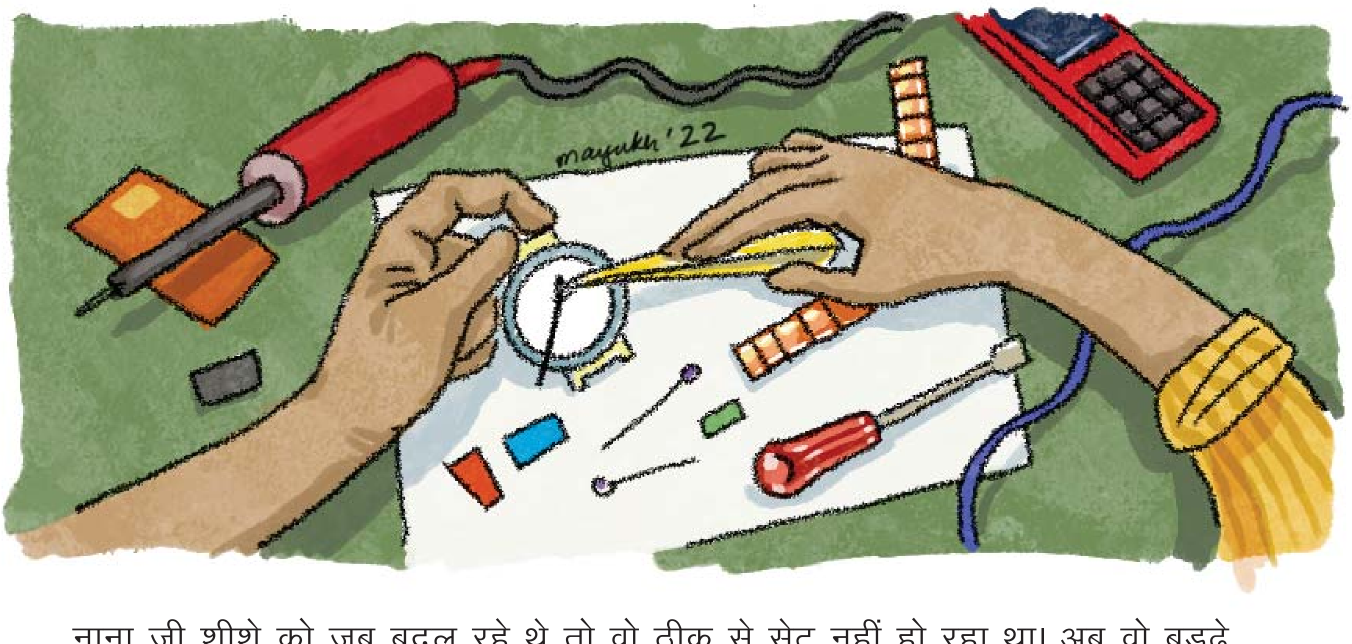

नाना जी शीशे को जब बदल रहे थे तो वो ठीक से सेट नहीं हो रहा था। अब वो बुड्ढे हो गए हैं। अत: उनमें इतनी ताकत नहीं रही कि वो घड़ी के शीशे को दबाकर उसे उसमें बैठा सकें। इसलिए उन्होंने डाई मशीन का उपयोग किया और शीशा बैठा दिया। मेरी घड़ी फिर से नई हो गई।

माथापच्ची जवाब

2. घण्टा

3. क्योंकि वह तीनों आग बुझाने वाले कर्मचारी थे। उन्हें पीछे घसीटकर उस आदमी ने आग बुझाने में बाधा पँहुचाई इसलिए उसे जेल हो गई।

1.

4. सवाल से पता चलता है कि रविवार को दोनों सच बोलते हैं और बाकी के दिन एक झूठ बोलता है, तो दूसरा सच। यदि उस दिन वाकई में रविवार होता तो दोनों कहते कि आज रविवार है। इसका मतलब है ज़ेनी झूठ बोल रही है। और जिस दिन ज़ेनी झूठ बोलती है उस दिन अयान सच बोलता है, यानी कि उस दिन गुरुवार था।

5.

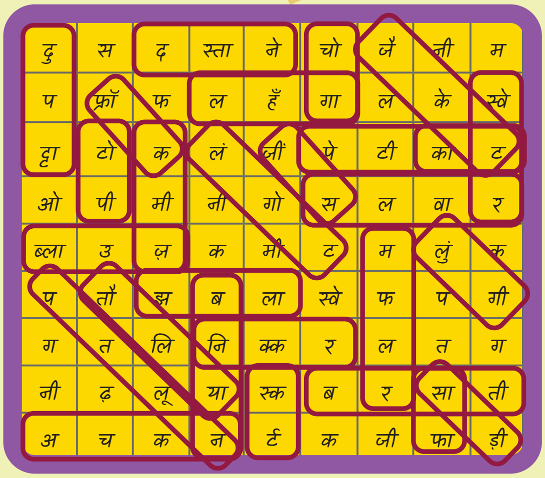

6.

7.

2 x 1 = 2

2 ÷ 1 = 2

2 - 1 = 1

8. कोड है 164।

3 और 8 नम्बर पहले व दूसरे कोड में शामिल हैं। पर संकेत 2 के अनुसार कोई भी नम्बर सही नहीं है। इसलिए सही कोड में 3 व 8 नहीं हो सकते। पहले कोड के हिसाब से 6 नम्बर सही है और सही जगह पर है। कोड 4 के संकेत के हिसाब से सही नम्बर 4 और 1 ही हो सकते हैं क्योंकि 7 नम्बर गलत है (संकेत 2 के अनुसार)। चूँकि कोड 4 में नम्बर गलत जगह पर हैं इसलिए सही कोड में इनकी जगह बदल गई है।

9.

10.

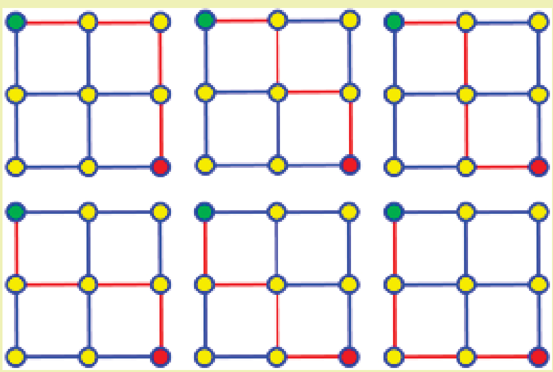

11. 100 मिलीलीटर क्षमता वाले मग का 1/3 भाग हुआ 75 मिलीलीटर। 900 मिलीलीटर को 75 से भाग देने पर 12 उत्तर मिलता है। तो इला को 12 मग की ज़रूरत होगी।

12. आधा किलो सेब का दाम होगा 24 रुपए। इसलिए फलवाला तुम्हें 100 - 24 यानी कि 76 रुपए वापिस करेगा।

13. उसे पता था कि वो अभी किस जगह से आ रहा है। इसलिए उसने बोर्ड को इस तरह लगाया कि तीर का निशान उस जगह को सही इंगित कर रहा हो। और फिर बाकी के तीर अपने-आप ही सही जगह का रास्ता बताएँगे।

14. कोई भी नहीं क्योंकि मुर्गी तो पिंजरे में है।

15. कमतर

16. सही क्रम है: सारा, दिशा, रुस्तम और मनजीत। यानी कि बाईं ओर से दूसरे नम्बर पर दिशा बैठी है।

17. 1

= 4 = 6 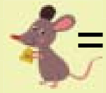 = 7

18.

भ	र	त	ना	ट्य	म
गि	द्दा	मा	क	बि	णि
ना	घू	शा	थ	हु	पु
भां	म	ला	क	ज	री
ग	र	बा	ली	थ	ओ
ड़ा	कु	चि	पु	ड़ी	क

अक्टूबर की चित्रपहेली का जवाब

इस अंक की चित्रपहेली का जवाब

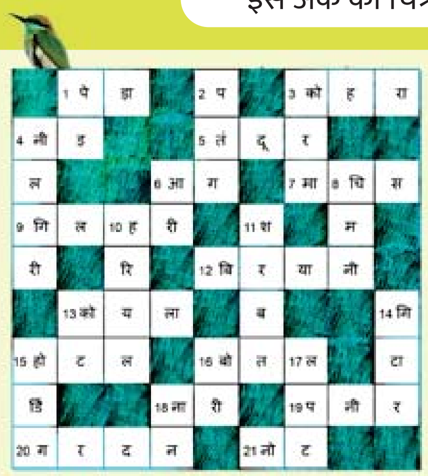

सुडोकू-58 का जवाब

6	2	9	3	7	1	8	5	4
4	7	5	6	8	2	3	9	1
3	8	1	4	9	5	2	7	6
2	3	7	9	6	8	4	1	5
9	1	8	2	5	4	7	6	3
5	6	4	1	3	7	9	8	2
8	5	3	7	2	6	1	4	9
1	9	6	8	4	3	5	2	7
7	4	2	5	1	9	6	3	8

सुडोकू-59 का जवाब

8	4	9	1	2	5	3	6	7
3	7	5	8	9	6	2	1	4
6	2	1	3	4	7	8	5	9
5	1	6	4	8	3	7	9	2
9	8	7	6	1	2	4	3	5
4	3	2	5	7	9	1	8	6
1	5	3	7	6	4	9	2	8
2	6	4	9	3	8	5	7	1
7	9	8	2	5	1	6	4	3

सुडोकू-60 का जवाब

1	7	2	3	5	9	8	6	4
8	6	9	2	4	7	1	3	5
4	5	3	1	6	8	7	2	9
2	8	4	6	1	3	9	5	7
5	9	7	4	8	2	3	1	6
6	3	1	7	9	5	2	4	8
9	2	5	8	3	4	6	7	1
7	1	8	5	2	6	4	9	3
3	4	6	9	7	1	5	8	2

RNI क्र. 50309/85 डाक पंजीयन क्र. म. प्र./भोपाल/261/2021-23

हाथी

सरस
तीसरी, शासकीय प्राथमिक विद्यालय झिरन्या
महेश्वर, खरगोन, मध्य प्रदेश

एक छोटा हाथी दिखता मोटा।
खाता है केले 10 से जादा।
पीता है पानी टंकी से जादा।
खाता भी है गन्ने मीठे।
हमारे लिए नहीं बचाता।
इधर उधर डोंडाता।
उसका घर नहीं होता।

प्रकाशक एवं मुद्रक राजेश खिंदरी द्वारा स्वामी रैक्स डी रोज़ारियो के लिए एकलव्य फाउंडेशन, जाटखेड़ी, फॉर्च्यून कस्तूरी के पास, भोपाल, मध्य प्रदेश 462 026
से प्रकाशित एवं आर के सिक्युप्रिन्ट प्रा लि प्लॉट नम्बर 15-बी, गोविन्दपुरा इण्डस्ट्रियल एरिया, गोविन्दपुरा, भोपाल - 462021 (फोन: 0755 - 2687589) से मुद्रित।
सम्पादक: विनता विश्वनाथन